THE QUALITY OF MIND THAT KNOWS NO SEPARATION	मन की एक ऐसी गुणवत्ता जो किसी अलगाव को नहीं जानती
It seems to me that the first thing to understand—in this chaotic and rather mad world—is how to listen to the conclusions, descriptions and analyses that people offer with regard to the problems that we all have. We have so many problems; not only in this deteriorating country, but also throughout the world, human beings are faced with extraordinarily complex problems. The experts, the intellectuals, the gurus, the theologians, the priests, offer explanations, each according to their particular conditioning, their particular belief, and so on. And the more one is confused, the more one is in sorrow, the more one seeks, then the more one wants comfort, security or clarity. There are those who offer security and clarity and I think it is wise to learn how to listen to what is offered by them (how to listen, not only to them, but also to the speaker) because we are so gullible, we want to accept, we want to be deceived, we want to be hypnotized by words, we want an easy way out of our confusion and sorrow. We are eager—most unfortunately—to accept, specially from those who, according to a formula, explain how to meet the crisis that exists throughout the world; their formulas vary according to their conditioning, according to the culture in which they have been brought up.	मुझे ऐसा लगता है कि इस अराजक और थोड़े विक्षिप्त संसार में जो पहली चीज समझने लायक है, वह यह है कि हमारी समस्याओं के संदर्भ में लोग प्रायः जो निष्कर्ष, वर्णन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं उन्हें हम ध्यान से कैसे सुनें। हमारी एक नहीं बल्कि अनेक समस्याएँ हैं – अवनति की ओर अग्रसर न केवल इस देश में बल्कि सारे संसार में, मनुष्य असाधारण रूप से जटिल समस्याओं से जूझ रहा है। विशेषज्ञ बुद्धिजीवी, गुरु, धर्ममीमांसक एवं पुरोहित अपनी-अपनी व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं। जो कि उनके अपने निजी संस्कारों, विश्वासों इत्यादि के अनुरूप होती है। व्यक्ति जितना भ्रमित होता है उतना ही अधिक वह दुःख में होता है और जितना ही वह इससे निकलने का उपक्रम करता है उतना ही अधिक वह सुख, सांत्वना, सुरक्षा या स्पष्टता की आकांक्षा करने लगता है। ऐसे लोग हैं जो यह सुरक्षा और स्पष्टता देने को तत्पर हैं और मेरे विचार से यह सीखना बुद्धिमत्तापूर्ण होगा कि वे जो बता रहे हैं उन्हें हम ध्यान से कैसे सुनें – न केवल उन्हें कैसे सुनें बल्कि इस वक्ता को भी कैसे सुनें। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि हमलोग इतने बुद्धू और भोले-भाले हैं कि हम किसी चीज को आँख मूदकर स्वीकार कर लेना चाहते हैं, हम ठगे जाने को बस तैयार ही रहते हैं, हम शब्दों द्वारा सम्मोहित होना चाहते हैं तथा हम अपने दुःख और दुर्दशा से बाहर निकलने का एक आसान उपाय चाहते हैं। अत्यंत दुर्भाग्यवश हम किसी की बातों को स्वीकार करने के लिए इच्छुक रहते हैं। खासकर उन लोगों की बातों को जो संसार के मौजूदा संकट का सामना करने का फार्मुला प्रस्तुत करते हैं। उनके फार्मुले उन संस्कारों और उस संस्कृति के अनुरूप होते हैं जिनमें स्वयं उनका पालन-पोषण हुआ है।
Human beings throughout the world have been conditioned according to formulas and concepts for thousands of years and when life— which is a movement—demands your total attention you cannot give it, for you are functioning, and thinking according to a formula, whether given by Shankara, or Marx, or Lenin, or the latest guru that you have. So one has to ask—why is it that human beings throughout the world live by formulas? I do not know if you have ever questioned why you always live at the conceptual level, why you always formulate an ideology and attempt to live and think at that level; whereas actuality is something entirely different. Actuality is the daily living which has nothing whatsoever to do	इस संसार में मनुष्य हजारों वर्षो से विभिन्न फार्मुला और सिद्धांतों द्वारा संस्कारित होता रहा है और जब यह जीवन जो एक सतत गति और प्रवाह है आपसे समग्र अवधान की माँग करता है तो वह देने के लिए आपके पास होता नहीं, क्योंकि आपका सोचना और कार्य करना सदा किसी फार्मुला या सिद्धांत के अनुसार ही होता है, चाहे वह सिद्धांत मार्क्स या लेनिन का हो अथवा आपके नवीनतम गुरु का। अतः हमें स्वयं से यह प्रश्न करना होगा ऐसा क्यों है कि सारे संसार में मानव फार्मुला के अनुसार ही जीता है? पता नहीं आपने स्वयं से कभी यह प्रश्न किया है या नहीं कि आप सदा अवधारणा के तल पर ही क्यों जीते हैं, आप किसी विचारधारा का प्रतिपादन क्यों करते हैं और उसी तल पर क्यों सोचते और जीते हैं, जबकि वास्तविकता बिल्कुल भिन्न चीज है। वास्तविकता हमारा दैनिक जीवन है जिसका कोई संबंध अवधारणाओं से नहीं है। यह पहली बात है जिसे हमें अत्यंत स्पष्ट रूप से समझ

with concepts; that is the first thing to realize. One has to scrap completely all the formulas, all the methods; one has to re-think the whole thing anew; one can no longer be a Hindu, a Christian, a Buddhist, a Muslim. As a human being—living in this country, in this dreadful town with all its miseries, squalor, dirt—one can no longer think in terms of formulas if one is to live a life that is complete, total, every minute.	लेनी चाहिए। सारे सिद्धांतों और पद्धतियों को हमें पूर्ण रूप से अस्वीकृत कर देना होगा तथा सारी बातों पर हमें नये सिरे से पुनर्विचार करना होगा। हम एक हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध या ईसाई बने नहीं रह सकते। एक मानव के रूप में जो इस देश में रहता है, जो इस भयानक शहर की धूल गंदगी और दुर्दशा के बीच रहता है यदि हम हर पल, हर मिनट एक समग्र और अखंड जीवन जीना चाहते हैं तो हम अब और अधिक समय तक फार्मुला या सिद्धांतों की शैली में नहीं सोच सकते।
Living is relationship. You cannot be related to another according to a formu]a--you understand? It is very simple. You have to live, you have to go to your office or factory and labour, strive; but if you try to live according to an image or formula established by your ancient teachers, you are not related at all—you are merely living according to an idea. It is the same in a Communist State in which they have established an ideology, by tyrrany, by conditioning the people—as the Christians have done, as the Hindus have done—they have conditioned the people by words, by propaganda, by incessant repetition.	जीने का अर्थ है मनुष्य का एक-दूसरे से परस्पर संबंधित होना। आप किसी फार्मुला के अनुसार दूसरे व्यक्ति से संबंधित नहीं हो सकते। क्या आप इसे समझ रहे हैं? यह बात अत्यंत सीधी और सरल है। आपको जीना है, आपको अपने कार्यालय या कारखाना जाना है, वहाँ जाकर मेहनत करनी है, प्रयास करना है, परंतु यदि आप अपने प्राचीन धर्मगुरुओं द्वारा स्थापित किसी प्रतिमा या फार्मुला के अनुसार जीने की कोशिश करते हैं तो दूसरों के साथ आपका कोई संबंध नहीं रह जाता क्योंकि उस स्थिति में आप एक धारणा के अनुसार जी रहे होते हैं। यही चीज घटित होती है किसी साम्यवादी राष्ट्र में भी जहाँ लोगों पर निरंकुश शासन करके तथा उनके मानसिक संस्कारों को बदलकर एक विशेष विचारधारा स्थापित कर दी गयी है। यही काम ईसाइयों और हिन्दूओं ने भी किया है। उन्होंने शब्दों एवं प्रचार द्वारा, अर्थात् किसी बात को बार-बार दोहराकर, जनमानस को संस्कारबद्ध कर डाला है।
Your mind functions at an ideological level, at a conceptual, abstract level, whereas living is the daily contact, the daily sorrow, misery, loneliness, despair; that is what we have to understand, not the abstraction, not the brilliant articles written by clever writers. When our daily life is so heavily clothed with ideologies it becomes shoddy, confusing, meaningless.	आपका मन वैचारिक तल पर ही कार्य करता है अर्थात् वह अवधारणा और कल्पना के तल पर कार्य करता है, जबकि जीने का अर्थ है दैनिक संपर्क। यह जो प्रतिदिन का हमारा दुःख, दुर्दशा, अकेलापन और निराशा है उसी को हमें समझना होगा, न कि किसी कल्पना को अथवा बुद्धिमान लेखकों के शानदार लेखों को। जब हमारे दैनिक जीवन पर विचारधाराओं की मोटी परतें जम जाती हैं तो हमारा जीवन निकृष्ट, भ्रामक और निरर्थक बन जाता है।
What one has to do, is to be aware of one's conditioning—just to know that one is conditioned, that one has been conditioned for centuries. If you do not realize this then you will continue to create great confusion, great misery, for others and for yourself.	हमें केवल इतना करना है कि हम अपने संस्कारों के प्रति सजग हो जाएँ, हमें इसका बोध रहे कि हम संस्कारबद्ध हैं। हमें यह जान लेना है कि हम सदियों से संस्कारग्रस्त हैं। यदि आप इस बात को स्पष्ट रूप से अनुभव नहीं करते तो आप दूसरों के लिए एवं अपने लिए भी परम दुःख और दुर्दशा का सृजन करते रहेंगे।
We do not know what love is; we do not love, we have become brutal, callous, indifferent, ruthless. Without love you can solve nothing. Have you ever asked yourselves why it is that you have no love	हमें यह नहीं मालूम कि प्रेम क्या है। हम प्रेम नहीं करते। हम क्रूर, कठोर, तटस्थ और निर्दय हो गये हैं। प्रेम के बिना आप किसी भी समस्या का समाधान नहीं कर सकते। क्या आपने स्वयं से कभी यह पूछा है कि

at all? You know what I mean by love?—just to be kind without any motive; just to be generous; to feel for others; to feel the ugliness of a filthy street, to feel the poverty; to see this explosion of population going on throughout the world, to feel it, to find out why, to cry, not over your own miserable little family, or a little death of someone whom you like, but to cry for the complete chaos of this world.	ऐसा क्यों है कि आपमें प्रेम बिल्कुल है ही नहीं? प्रेम से मेरा जो अभिप्राय है उसे क्या आप समझ रहे हैं? मेरा अभिप्राय है बिना किसी प्रयोजन के परोपकारी होना, उदार होना, दूसरों के प्रति संवेदनाएँ महसूस करना, किसी गंदी गली की कुरूपता को महसूस करना, गरीबी को महसूस करना; चारों ओर बढ़ती हुई जनसंख्या को देखना, उसे महसूस करना तथा उसके कारण का पता लगाना, रोना – अपने घर-परिवार की बुरी हालत पर नहीं या आपने किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु पर नहीं बल्कि इस संसार की व्यापक दुर्दशा पर रोना।
All feeling has been lost because we have become so very clever. Cleverness is worldliness—do realize it. When we are clever we are really worldly; we have become clever through education; we have become clever because over-population forces us to struggle hard to live—competing, driving out others by our cleverness; by passing exams and getting a job. We have become clever through the desire for mere survival—watch yourself. We never discuss realities—how to end war, how to be kind, how to be generous—yet we are always willing to discuss abstract things.	हमारी समस्त संवेदना लुप्त हो गयी है क्योंकि हम अत्यधिक होशियार और चतुर हो गये हैं। यह चतुराई ही सांसारिकता है, आप इसे स्पष्ट रूप से अनुभव कीजिए। जब हम चतुर होते हैं तो हम सचमुच सांसारिक होते हैं। यह चतुराई हमने अपनी शिक्षा के माध्यम से अर्जित की है। हम इसलिए भी चतुर हो गये हैं क्योंकि जनसंख्या वृद्धि हमें जीने के लिए कड़े संघर्ष करने पर बाध्य करती है – दूसरों से प्रतिस्पर्धा करना, अपनी चतुराई से दूसरों को पीछे छोड़ देना, किसी परीक्षा में या नौकरी हासिल करने में, अपना जीवन-अस्तित्व कायम रखने की जो हमारी चाह है वह भी हमें चतुर बनाती है, इसका अपने भीतर अवलोकन कीजिए। हम ऐसी सार्थक बातों पर कभी चर्चा नहीं करते कि युद्ध का अंत कैसे करें, दयालु कैसे हों, उदार कैसे हों, लेकिन काल्पनिक और गूढ़ बातों पर चर्चा करने के लिए हम सदा तैयार रहते हैं।
I mean by love, a quality of mind that knows no separation—you understand?—for when there is separation there is conflict, there is envy, there is jealousy, antagonism, the desire for power, position; the results of our clever worldliness. When there is separation between you and another there is no relationship—though you may be married, have children, have sex—and when you feel separate from another you have no love, and without love you will not be able to solve the problems of this world or any problem with which you are faced. Do please realize this fundamental issue—you have no love—and why?—why isn't it bubbling in you when you see the beauty of a sunset or a tree, when you see sorrow, misery, confusion, the agonizing existence of man?— why have you no love? That is the fundamental question; not whether God exists or not, not what is going to happen to you when you die; but why haven't you, as human beings, this quality of mind that goes beyond all separation, that goes beyond all nationalities, all religions and	प्रेम से मेरा मतलब है मन की एक ऐसी गुणवत्ता जो किसी अलगाव को नहीं जानती। क्या आप इसे समझ रहे हैं? वस्तुतः जहाँ कहीं अलगाव का बोध है वहाँ द्वंद्व है, ईर्ष्या और जलन है, वैरभाव है, शक्ति और पद की आकांक्षा है जो हमारी चतुराईपूर्ण सांसारिकता के ही परिणाम हैं। जब आपके और दूसरे के बीच कोई अलगाव का बोध होता है तो वहाँ वस्तुतः कोई संबंध नहीं होता भले ही आप दोनों परस्पर विवाहित हों, आप दोनो कामवासना का सुख लेते हों और आपके बाल-बच्चे भी हों। जब आप स्वयं को दूसरे से अलग महसूस करते हैं तो आपमें प्रेम नहीं होता, और प्रेम के बिना आप किसी भी समस्या का समाधान नहीं कर पायेंगे चाहे वे संसार की समस्याएँ हों या आपकी कोई व्यक्तिगत समस्या। आप इस बुनियादी सवाल को अच्छी तरह अनुभव कीजिए – आपमें प्रेम नहीं है ऐसा क्यों? आपमें प्रेम की तरंगें क्यों नहीं उठती जब आप सूर्यास्त के सौन्दर्य को या एक वृक्ष को देखते हैं अथवा जब आप मनुष्य के दुःख, पीड़ा, दुर्दशा एवं उसके जीवन-मरण संघर्ष से भरे अस्तित्व को देखते हैं? आपमें यह प्रेम क्यों नहीं है? यही मौलिक प्रश्न है न कि यह प्रश्न कि ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं या मरने के बाद क्या होता है। तो यह बताइए कि एक मानव के रूप में आपके पास मन की वह गुणवत्ता क्यों नहीं है जो समस्त अलगाव के परे है, जो समस्त राष्ट्रीयता, समस्त धर्म, उनके विश्वास एवं मताग्रह के

their beliefs, their dogmas and all the inventions man has brought about to protect himself—why? Do you ask yourself please. This is really a very important question—don't brush it off.	परे है तथा जो अपनी सुरक्षा के लिए मनुष्य द्वारा किये गये आविष्कारों के भी परे है। क्यों? कृपया स्वयं से यह प्रश्न कीजिए। यह सचमुच ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न है, अतः आप इसकी उपेक्षा न करें।
Why is it that you, as a human being—so capable, so clever, so cunning, so competitive, having achieved so much technologically, capable of going to the moon or living for weeks under the sea, inventing the extraordinary electronic brain—why is it that you have not the one thing that matters? Without love you become bitter, you are afraid, all relationship is conflict. I do not know if you have ever seriously faced this issue, as to why your hearts are empty.	एक मानव के रूप में - ऐसा मानव जो इतना समर्थ, चतुर, धूर्त एवं प्रतिस्पर्धात्मक है तथा जो तकनीकी रूप से बहुत कुछ उपलब्ध कर चुका है, जो चाँद पर जाने में, हफ्तों तक समुद्र के नीचे रहने में एवं असाधारण इलेक्ट्रानिक मस्तिष्क का आविष्कार करने में सक्षम है - ऐसे मानव के रूप में आपके पास वह एक चीज क्यों नहीं है जो सचमुच महत्त्व रखती है? प्रेम के बिना आप कटु और भयभीत हो जाते हैं तथा आपका सारा संबंध द्वंद्व का रूप ले लेता है। पता नहीं आपने इस प्रश्न का कभी गंभीरता से सामना किया है या नहीं कि आपका हृदय खाली क्यों है!
This is not an emotional, sentimental, gathering. Love is not sentimental, or emotional, it has nothing whatsoever to do with devotion, or loyalty. One has to find out why one has no love; and in the finding perhaps one will come upon it. One cannot cultivate love, one cannot achieve love through practising a method; there is no school to which you can go and learn. And without love—do what you will, go to all the temples in the world, read all the so-called sacred books—without love your life will be in confusion, your life will be in sorrow.	यह कोई भावुकतापूर्ण या भावनात्मक सम्मेलन नहीं है। प्रेम का संबंध भावना या भावुकता से नहीं है और न ही इसका कोई संबंध भक्ति या वफादारी से है। आपको पता लगाना होगा कि आपमें प्रेम क्यों नहीं है और यह पता लगाने में ही शायद आपका प्रेम से अकस्मात साक्षात्कार हो जाए। आप प्रेम को विकसित नहीं कर सकते। आप किसी विधि का अभ्यास करके प्रेम को उपलब्ध नहीं कर सकते। ऐसी कोई पाठशाला नहीं है जहाँ जाकर आप प्रेम की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। प्रेम के बिना आप चाहे जो कुछ करें, संसार के सभी मंदिरों में पूजा कर आएँ, सभी तथाकथित धर्मशास्त्रों को पढ़ लें परंतु प्रेम के बिना आपका जीवन अस्तव्यस्तता और दुःख की स्थिति में ही होगा।
What your daily life is, your society is. You understand Sirs? Society is not different from you, from what you are, what you have been; that is the community in which you live. Social disorder exists because you are disorderly in your own life. Yet order cannot come about through intellectual organization, through a plan—we have tried all these things for thousands of years, so many human beings have endeavoured to create a new society, a new community, a new way of living, and they have all failed, and they will always fail, because they build on a formula, on a concept, on an ideology.	आपका दैनिक जीवन जैसा है वैसा ही आपका समाज है। महानुभाव क्या आप इसे समझ रहे हैं? समाज अर्थात वह समुदाय जिसमें आप जीते हैं वह आप से, आप जो हैं उससे या आप जो अब तक रहे हैं उससे भिन्न नहीं है। सामाजिक अव्यवस्था इसीलिए है क्योंकि आप स्वयं अपने जीवन में अव्यवस्थित हैं। आपके जीवन में व्यवस्था का जन्म किसी बौद्धिक संगठन अथवा योजना द्वारा नहीं हो सकता। हमलोग पिछले कुछ हजार वर्षों में ये सारी चीजें आजमा चुके हैं। अनेक व्यक्तियों ने एक नये समाज, एक नये समुदाय एवं एक नयी जीवन-शैली की रचना करने का प्रयास किया और वे सभी असफल हो गये। उन्हें असफल होना ही था, क्योंकि वे जिस चीज की रचना कर रहे थे वह एक सिद्धांत, एक अवधारणा या एक विचारधारा पर आधारित था।

So we are going to find out whether we can give our hearts to solve this problem of existence—the daily torture of living, the daily misery, the daily confusion, the passing joy, the passing pleasure which is called life. You cannot solve it without understanding it, which is to love it. You cannot love if you do not know what is involved in separation and what relationship means; we are going to examine that, not intellectually, not verbally, but actually. To do this is to look, to observe what your actual relationship is—the daily relationship with your wife, with your family, with your boss, with your neighbour—and to see whether it is at all possible to go beyond this separative narrow existence.	अतः हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि क्या हम पूरे हृदय से उस समस्या का समाधान कर सकते हैं जिसका संबंध हमारे दैनिक अस्तित्व से है अर्थात हमारे जीवन की यंत्रणा, दुःख, अस्तव्यस्तता, क्षणिक खुशियाँ एवं अस्थायी सुख, जिसे जीवन कहा जाता है। आप इन सबको समझे बिना इनका समाधान नहीं कर सकते। इनको समझना अर्थात् इनके प्रति प्रेमपूर्ण होना। यदि आप यह नहीं जानते कि अलगाव में क्या अन्तर्निहित है तथा परस्पर संबंध का क्या अर्थ है तो आप प्रेम भी नहीं कर सकते। हम इसकी जाँच-पड़ताल करने जा रहे हैं, बौद्धिक और शाब्दिक रूप से नहीं बल्कि वास्तविक रूप से। जाँच पड़ताल करने के लिए आपको यह देखना और अवलोकन करना होगा कि आपका वास्तविक दैनिक संबंध क्या है अपनी पत्नी से, अपने परिवार से, अपने उच्च अधिकारी (बॉस) से, अपने पड़ोसी से तथा आपको यह पता लगाना होगा कि अपने इस अलगाव कारी और संकुचित अस्तित्व के परे जाना संभव है या नहीं।
First of all, do not be caught by words—you understand? The word is not the actual thing, the word 'tree' is not the actual tree—that's simple. The word will not help you to touch the tree; you have to come into contact with it, to put your hand upon it. We are slaves to words, slaves to ideas, images and symbols. To come into touch with something directly the word must not interfere. So one has to learn the art of seeing and listening, and to find out how to look; how to look at the world in which you live; how to look at a tree, at a cloud, at the beauty of the sunset. To see something very clearly you must be sensitive—you understand?—and if your hands are hard, brutal, cruel, you cannot touch the tree. If your eyes are blind with your worries, with your gods, with your wife, with your sex, with your fears, you cannot see the cloud, the beauty of the sunset.	सबसे पहली बात तो यह कि आप शब्दों में ही न उलझ जाएँ। क्या आप इसे समझ रहे हैं? शब्द वास्तविक वस्तु नहीं है। 'वृक्ष' शब्द वास्तविक वृक्ष नहीं है यह बात एकदम सीधी और सरल है। अतः यह शब्द वृक्ष का स्पर्श करने में आपकी सहायता नहीं करेगा। वृक्ष का स्पर्श करने के लिए आपको उसके संपर्क में आना होगा, उस पर अपना हाथ रखना होगा। परंतु विडंबना यह है कि हमलोग शब्दों, विचारों, प्रतिमाओं और प्रतीकों के ही गुलाम हैं। यदि हमें किसी वस्तु के प्रत्यक्ष संसर्ग में आना है तो यह जरूरी है कि शब्द हस्तक्षेप न करें। अतः आपको देखने और सुनने की कला सीखनी होगी। आपको यह पता लगाना होगा कि ध्यानपूर्वक कैसे देखें जिस संसार में आप जीते हैं उसे कैसे देखें किसी वृक्ष, बादल या सूर्यास्त के सौन्दर्य को कैसे देखें। किसी भी चीज को अतयंत स्पष्ट रूप से देखने के लिए आपको संवेदनशील होना चाहिए। क्या आप इसे समझ रहे हैं? यदि आपके हाथ सख्त, कठोर और हृदयहीन है तो आप वृक्ष का स्पर्श नही कर सकते। यदि आपकी आँखें चिंताओं से अंधी हो गयी हैं तो आप बादल या सूर्यास्त के सौन्दर्य को नहीं देख सकते - इन चिंताओं का संबंध आपके देवी-देवताओं से हो या आपकी पत्नी, आपकी कामवासना, आपके भय से।
One has to learn how to look, how to see and this art cannot be learnt from another, you have to do it yourself. When the speaker is explaining do not be carried away by the explanation, but actually do it. Don't say, T will try and do it'—that's one of the most evasive statements you can ever make. Either you do it, or you don't do it—there is no trying, or doing your best.	आपको यह सीखना है कि ध्यानपूर्वक कैसे अवलोकन करें तथा देखें और यह कला दूसरों से नहीं सीखी जा सकती। आपको स्वयं ही यह सीखना होगा। जब यह वक्ता आपको ये बातें समझा रहा है तो आप उसकी व्याख्या से प्रभावित और उत्तेजित न हों बल्कि आप सचमुच स्वयं सीखें। ऐसा मत कहिए ''मैं कोशिश करूँगा ऐसा करने की'' इससे अधिक अस्पष्ट तथा अनिश्चित वक्तव्य भला आप क्या दे सकते हैं! या तो आप ऐसा करते हैं अथवा नहीं करते, परंतु प्रयास

	करना, भरसक कोशिश करना जैसा कुछ नहीं होता।
When you look at a leaf, how do you look at it? You obviously look at it with your eyes, but also you look at it with your mind—the mind which has its own memory of that leaf, the botanical name of that leaf. So you look with your eyes, but you also look through associated memories—right? There is a dual process going on, You see with your eyes and also you see through your memory, through the image that you have about that leaf or about your wife or husband, or about the cloud.	जब आप किसी पत्ते को देखते हैं, तो आप उसे कैसे देखते हैं? इतना तो स्पष्ट है कि आप उसे अपनी आँखों से देखते हैं, परंतु आप उसे अपने मन से भी देखते हैं - मन जो उस पत्ते की तथा उस पौधे के वानस्पतिक नाम की स्वयं एक अपनी स्मृति रखता है। अतः आप अपनी आँखों से देखते हैं, परंतु आप संबंधित स्मृतियों के द्वारा भी देखते हैं। समझे आप? इस प्रकार एक दोहरी प्रक्रिया चलती रहती है। अतः आप अपनी आँखों से तो देखते ही हैं, साथ ही साथ आपकी जो स्मृति है, आपने जो प्रतिमा बना रखी है उस पत्ते के बारे में अथवा अपने पति या पत्नी के बारे में, बादल के बारे में उसके माध्यम से भी आप देखते हैं।
When you look at your husband or wife, you look at him or her with the image that you have—the image that you have built through many years, of the images of sex, of pleasure, or irritation, of nagging, of angry words, of comfort and so on; you have built images about each other—that is actual fact. Now, it is these two images that are related, and for this reason you have no direct relationship at all, there is a separation—there must be a separation—hence conflict, and hence the total absence of love. As long as you are not aware of the mechanism, structure and nature of the image, then you will never be free of it and you will always be in conflict.	जब आप अपने पति या पत्नी को देखते हैं तो आप उसे उस प्रतिमा के द्वारा देखते हैं जिसका निर्माण आपने उसके साथ बिताये अनेक वर्षो की स्मृतियों से किया है - कामवासना की पूर्ति की स्मृति, सुख की स्मृति, झुँझलाहट की स्मृति, परेशानी की स्मृति, गुस्से में बोले गये शब्दों की स्मृति इत्यादि। आप दोनों ने एक-दूसरे के बारे में प्रतिमा बना रखी है यह एक वास्तविक तथ्य है। अतः आप पति पत्नी के बीच का संबंध वस्तुतः उन दो प्रतिमाओं के बीच का संबंध है और यही कारण है कि आप दोनों के बीच प्रत्यक्ष और सीधा संबंध नहीं है। वहाँ सदा एक अलगाव का भाव बना हुआ है, यह अलगाव अवश्यंभावी है इसलिए वहाँ द्वंद्व है तथा प्रेम का सर्वथा अभाव है। जब तक आप इस प्रतिमा के रचनातंत्र, ढाँचा और उसके स्वरूप के प्रति सजग नहीं हो जाते तब तक आप उससे मुक्त नहीं होंगे और हमेशा द्वंद्व में रहेंगे।
The world needs co-operation—this country needs it desperately. This country, which is dividing itself so catastrophically through linguistic division, through petty national division, and so on, must have co-operation to live at all. How can you co-operate with another if you have no love? How can you use that word, 'co-operation' when you are ambitious, separative, competitive, dividing yourself by words, by beliefs, by dogmas? Yet when you know how to co-operate truly, then you will also know how not to co-operate—you must know both. When you know the meaning and the depth and the significance of co-operation then you will know the moment for the right action of non-co-operation. But first one must know how to co-operate, and there can be no co-operation if there is separation. Separation will always exist—	संसार में परस्पर सहयोग की जरूरत है। इस देश में तो इसकी जरूरत बहुत ज्यादा है। यह देश, जो भाषा, जाति, संप्रदाय आदि के नाम पर खंड-खंड विभाजित होने को तैयार है, यहाँ जीने के लिए सहयोग परम आवश्यक है। लेकिन यदि आपमें प्रेम हो ही न तो आप दूसरे के साथ सहयोग कर कैसे सकते हैं? यदि आप महत्त्वाकांक्षी, अलगाववादी, प्रतिस्पर्धात्मक हैं तथा स्वयं को शब्दों, विश्वासों एवं मतग्रहों के द्वारा विभाजित कर रहे हैं तो आप सहयोग शब्द का प्रयोग भी कैसे कर सकते हैं? फिर भी जब आपकी समझ में यह आ जाता है कि सच्चे अर्थ में सहयोग कैसे करें, तो आप स्वतः यह भी जान जाते हैं कि सहयोग न कैसे करें, आपको वस्तुतः दोनों ही जानना चाहिए। जब आप सहयोग के अर्थ, गहराई और महत्त्व को जान लेंगे तो जीवन में असहयोग के सही कर्म का क्षण जब आयेगा तो वह भी आपको मालूम होगा। परंतु आपको पहले यह जानना चाहिए कि सहयोग कैसे करें, और यह सहयोग तब तक संभव नहीं है जब तक अलगाव का बोध है। यदि आप अपने मन में स्वनिर्मित प्रतिमाओं को ढो रहे हैं तो अलगाव का अस्तित्व सदा रहेगा भले

although you live in a family, though you sleep with your wife or husband—if you have an image. See first, that because of your image of ambition, of greed, envy and success—though you may live in the same house, beget children— that both of you are separate, you are not co-operating. Co-operation can only come when there is love; love is not sentimental, it has nothing to do with emotionalism; love is not pleasure, love is not desire. To come upon this extraordinary thing, the beauty of it, one must learn how to look, to look at the tree, to look at your wife and children.	ही आप एक परिवार में रहते हों, भले ही आप अपने पति या पत्नी के साथ सोते हों। आप पति-पत्नी चाहे एक ही घर में रहते हों, बच्चे भी पैदा करते हों, लेकिन लोभ, ईर्ष्या, महत्वाकांक्षा और सफलता का जो प्रतिबिंब आपके मन में निर्मित हो रहा है उसके कारण आप दोनों एक साथ रहकर भी वस्तुतः अलग-अलग हैं, आप एक-दूसरे के साथ सहयोग नहीं कर रहे हैं। सहयोग तभी होगा जब प्रेम होगा। प्रेम भावात्मक नहीं होता। भावुकता से प्रेम का कोई लेना-देना नहीं है और न ही सुखोपभोग यानी मौज मस्ती से। प्रेम वासना नहीं है। यदि आप इस अद्‌भुत वस्तु और इसके सौन्दर्य का साक्षात्कार करना चाहते हैं तो आप पहले यह सीखिए कि ध्यानपूर्वक कैसे देखें, किसी पेड़ को कैसे देखें, अपनी पत्नी और अपने बच्चे को कैसे देखें।
Why have human beings come to this extraordinary crisis, this crisis of total disorganization, this disorder, this confusion within themselves which is expressed outwardly in society?—why has man—who has lived for so many thousands and thousands of years—come to such misery and conflict, why?—this chaos has become so frightening, what is the reason of it? You will say 'it is the over-population'—twelve and a half million people are born every year in India, which is already over-populated. You will say 'it is the morality that goes with technological knowledge'—you will say 'it is the lack of communication'—these are the slick, easy answers. In such an easy answer you won't find the depth or the truth of the matter. Why is it that you, in this country, who have lived for so long, with your teachers, with your Shankaras, Gitas, gurus, with the immature saints, why is it that you find yourselves now actually in this state, in disorder, in this confusion—why? If you put aside the easy explanations of over-population, lack of morality which goes with technological knowledge and this lack of direct communication—which may be true—what then is the fundamental reason, the fundamental cause of this misery? Why is it that a country like this, that has had the tradition of goodness, kindliness, of not killing, not being brutal— tradition, not that you lived it—why, when you have had all these teachers, why is it and whence is it that something has totally gone wrong?	मनुष्य को आज इस असाधारण संकट का सामना क्यों करना पड़ रहा है? वस्तुतः उसके भीतर विश्रृंखलता, अव्यवस्था और अस्तव्यस्तता का जो भीषण संकट है वही बाहर आकर समाज में अभिव्यक्त हो रहा है। इस पृथ्वी पर हजारों-लाखों वर्ष से जीता आया मानव आज इस दुर्गति और द्वंद्व की दशा में क्यों है? क्यों? यह अराजक स्थिति अत्यंत भयानक हो गयी है। इसका क्या कारण है? आप कहेंगे, अत्यधिक आबादी; पहले से ही जनसंख्या-वृद्धि के बोझ तले दबे इस भारत देश में हर वर्ष लगभग सवा करोड़ लोग जन्म लेते हैं। अथवा आप यह कहेंगे कि इस अराजक स्थिति का कारण यह नैतिकता है जो वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान के आगमन के साथ विदा हो जाती है। अथवा आप यह कह सकते हैं कि संवाद का जो अभाव है वही इस पूरे संकट के लिए जिम्मेदार है। ये सब तो बस चालाकी भरे कुछ आसान उत्तर हैं। इस प्रकार के किसी भी आसान उत्तर में आप समस्या की गहराई या असलियत का पता नहीं पा सकते। ऐसा क्यों है कि उपदेशकों, शंकराचार्यों, गीता-उपनिषदों, गुरुओं और साधु-संतों से भरे इस देश में इतने लंबे समय तक रहने के बावजूद आज आप स्वयं को अव्यवस्था और अस्तव्यस्तता की ही अवस्था में पाते हैं? क्यों? जनसंख्या-वृद्धि, तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप उत्पन्न नैतिकता का अभाव, प्रत्यक्ष संवाद का अभाव ये सभी सच हो सकते हैं परंतु आसानी से हाथ लगे अपने इस स्पष्टीकरण को यदि आप एक ओर हटा कर खोजें तो इस दुःख-दुर्दशा का मूलभूत कारण क्या है, बुनियादी वजह क्या है? यह देश जहाँ नेकी, दया, अहिंसा और प्रेम की परंपरा रही है--मेरा मतलब यह नहीं है कि इस परंपरा को आपने अपने जीवन में सचमुच जिया है--तथा जहाँ अनेक उपदेशक और गुरु रहे हैं, वहाँ कोई मौलिक भूल हो गयी प्रतीत होती है। क्यों और कहाँ से हुई यह गलती?

To go into it, you must examine very closely; to examine you must not be prejudiced; to find out you must be free and unafraid. We are going to find out, that is, find out the cause; but the finding out of the cause is not going to help you to be free of the cause—please do understand this. You may know that you feel ill because you have cancer, but knowing that you have cancer does not free you from that disease, you may have to have a surgical operation. Similarly, you may find the cause of your sorrow but this does not free you from the effect of it; what frees you from the effect of it is the immediate understanding of the cause—the surgical operation on it. You have to look, you have to examine the cause, and for this there must be freedom; you might be frightened, because freedom implies total negation of the past, total negation of your gods, your beliefs, your rituals—total denial of all that. Most people are frightened to be free, yet it is only the free mind—the eager mind, the mind that is awake—that can really find out how this calamity, this immense sorrow has come upon the human being.	इस प्रश्न की गहराई में जाने के लिए आपको ध्यानपूर्वक जाँच-पड़ताल करनी होगी। जाँच-पड़ताल करने के लिए यह जरूरी है कि आप पूर्वाग्रह से ग्रस्त हों। किसी भी विषय की छानबीन करने के लिए आपको स्वतंत्र और निर्भय होना चाहिए। तो हम मनुष्य के दुःख-दुर्दशा के कारण का पता लगा रहे हैं, लेकिन कारण का पता लग जाने से ही हम कारण से मुक्त नहीं हो जाएंगे, कृप्या आप इसे अच्छी तरह समझ लें। आप यह मालूम कर सकते हैं कि आप बीमार इसलिए है क्योंकि आपको कैन्सर है; लेकिन कैन्सर का पता लगा लेना ही आपको इस बीमारी से मुक्त नहीं करता; आपको आपरेशन यानी चीरफाड़ द्वारा इलाज कराना पड़ सकता है। उसी तरह आपको अपने दुःख के कारण का पता लग सकता है लेकिन कारण का पता लग जाना ही आपको उस दुःख के प्रभाव से मुक्त नहीं करता। जो चीज वस्तुतः आपको उस प्रभाव से मुक्त करती है वह है कारण की तत्क्षण समझ जो कि इस कारण का आपरेशन की तरह कार्य करती है। आपको अवलोकन करना होगा; आपको कारण की जाँच-पड़ताल करनी होगी, और इसके लिए स्वतंत्रता होनी चाहिए। संभवतः आपको भय लगे, क्योंकि स्वतंत्रता का निहितार्थ है अतीत का समग्र निषेध आपके ईश्वर, देवी-देवताओं, विश्वासों, कर्मकांडो, न सभी का समग्र अस्वीकार। अधिकांश लोग स्वतंत्र होने से डरते हैं, फिर भी सचाई यही है कि जो मन स्वतंत्र है, ऐसा मन जो जिज्ञासु और जागरूक है, वही वस्तुतः यह पता लगा सकता है कि मानव इस विपत्ति का यानी इस असीम दुःख का शिकार कैसे हो गया है।
So to take the journey the first thing to ensure is that you travel lightly, without all your burdens, without all your prejudices and worries. And that is to bring about a total revolution in ourselves; a total mutation of the mind must take place; and it cannot take place if you are not free to find out, afraid of what may happen.	अतः जो यात्रा हमलोग कर रहे हैं उसके लिए हमें सबसे पहले इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमलोग हल्के होकर चलें, बिना किसी बोझ के अर्थात् बिना अपने पूर्वाग्रहों और चिंताओं के। इसका अर्थ है अपने भीतर एक समग्र क्रांति लाना; अर्थात् हमारे मन में समग्र रूप से एक गुणात्मक परिवर्तन घटित होना चाहिए। यदि आप अपनी खोज और छानबीन में स्वतंत्र नहीं है अथवा आपको इस बात का भय है कि न जाने आगे क्या होने वाला है, तो मन का यह गुणात्मक परिवर्तन नहीं घटित हो सकता।
If you are lucky enough, and find out how to listen, how to see, then you will find for yourself that there is a benediction in the very act of seeing, in the very act of listening—not the benediction from a god, there is no benediction from gods, there is no benediction from prayers, none from the temples—a benediction that only comes when you know how to love.	यदि आप पर्याप्त रूप से भाग्यशाली हैं और आप यह पता लगा रहे हैं कि ध्यानपूर्वक कैसे देखें और सुनें तो आप स्वतः पायेंगे कि देखने और सुनने के कर्म में ही आशिष की वर्षा होती है किसी ईश्वर की ओर से नहीं। देवी-देवताओं, प्रार्थनाओं या मंदिरो से आशिष का आगमन नहीं होता। यह एक ऐसा आशिष है जिसका आगमन तभी होता है जब आप जान लेते हैं कि प्रेम कैसे करें।
	बुलेटिन २०, १९७३-७४
An edited Talk which Krishnamurti gave in Bombay in 1968.	बंबई, जनवरी १९६८

	अनुवादक हरीश
J. Krishnamurti Banaras, India 7th January 1954 4th Talk to Students at Rajghat School	**शिक्षा का सही रूप**
Don't you think that it is very important, while you are at school, you should not feel any anxiety, any sense of uncertainty but you should have a great deal of that feeling of being secure. You know what it is to feel secure? There are different kinds of security, of the feeling that you are safe. While you are very young, you have the security of relying on older people, the feeling that somebody is looking after you to give you the right food, the right clothing, the right atmosphere; you have a sense of feeling that you are being cared for, looked after - which is essential, which is absolutely necessary while one is very young. As you grow older and go out of the school into the College and so on into life, that security, that feeling that you are physically safe physically being looked after, goes into another field. You want to feel inwardly, spiritually, psychologically safe; you want to have somebody to help you, to guide you, to look after you, whom you call a guru or guide; or you have some belief or some ideal because you want something to rely on. The problem of seeking security, safety, is very very complex, and we won't deal with that now. I think that while you are at school, you ought to have physical and emotional and mental stability, the mental and physical feeling that you are being looked after, that you are being cared for, that your future is being carefully nurtured, carefully being watched over, so that while you are very young, while you are at school, there is no sense of anxiety, no sense of fear. That is essential because, to have anxiety, fear, apprehension, wondering as to what is going to happen to you, is very bad, is very detrimental to your thinking; out of that state, there can be no intelligence. It is only when you feel you have teachers who can really look after you, care for you physically, mentally and emotionally who are helping you to find out what you want to do in life, not forcing their opinions or	बच्चों क्या तुम्हें नहीं लगता कि यह अत्यंत आवश्यक है कि जब कि तुम स्कूल में हो तब तक किसी प्रकार की चिंता या अनिश्चितता का अनुभव तुम न करो? इसके बजाय तुम्हें काफी सुरक्षित अनुभव करना चाहिए। क्या तुम्हें मालूम है कि स्वयं को सुरक्षित अनुभव करना क्या होता है? विभिन्न प्रकार की सुरक्षा होती है – इस बात की अनुभूति कि मैं सही सलामत हूँ। जब तुम बहुत छोटे होते हो तो तुम्हें बड़ों पर आश्रित होने की सुरक्षा उपलब्ध रहती है जो तुम्हें यह अनुभव कराता है कि कोई व्यक्ति तुम्हारी देखभाल कर रहा है, अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा, अच्छा वातावरण प्रदान कर रहा है। तुम्हें इस बात का अनुभव होता है कि तुम्हारा ख्याल रखा जा रहा है, तुम्हारी देखभाल की जा रही है इस प्रकार का भरोसा एक छोटे बालक के लिए अनिवार्य है, परम आवश्यक है। जब तुम बड़े होते हो और स्कूल से निकल कर कालेज में जाते हो तथा जीवन में प्रवेश करते हो तब सुरक्षा की यह भावना अर्थात् शारीरिक रूप से सही-सलामत होने का भाव बदल जाता है। तब तुम आंतरिक, आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से सही-सलामत अनुभव करना चाहते हो। तुम चाहते हो कि तुम्हारे पास कोई ऐसा व्यक्ति हो जो तुम्हारी सहायता करे, तुम्हें मार्गदर्शन दे, तुम्हारी देखभाल करे, जिसे तुम गुरु या मार्गदर्शक कहते हो; अथवा तुम्हारे पास कोई आस्था या आदर्श होता है क्योंकि तुम कोई ऐसी चीज चाहते हो जिसे तुम अपना अवलंब बना सको अर्थात् जिस पर तुम आश्रित हो सको। सुरक्षा खोजने की समस्या अत्यधिक जटिल है इसलिए हम लोग इस पर अभी चर्चा नहीं करेंगे। मुझे लगता है कि अपने स्कूली जीवन के दौरान तुम्हारे पास शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्थिरता होनी चाहिए अर्थात् शारीरिक और मानसिक तल पर यह भाव कि मेरी देखभाल की जा रही है, मेरा ध्यान रखा जा रहा है, मेरे भविष्य को सावधानीपूर्वक सँवारा जा रहा है तथा उसकी सावधानीपूर्वक निगरानी की जा रही है ताकि जब तक तुम अपने बचपन के दौरान स्कूल में हो तब तक तुम्हें किसी प्रकार की चिंता या भय का अनुभव न हो। यह अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इस प्रकार की चिंता, भय या आशंका कि मेरा क्या होगा अत्यंत बुरी है, यह तुम्हारे सोचने-विचारने की शक्ति के लिए अत्यंत हानिकारक है। ऐसी अवस्था में प्रज्ञा का अस्तित्व नहीं हो सकता। जब तुम्हें महसूस होता है कि तुम ऐसे शिक्षकों की छत्रछाया में हो जो सचमुच तुम्हारी देखभाल कर सकते हैं, जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से तुम्हारा ध्यान रख सकते हैं तथा जो यह पता लगाने में तुम्हारी मदद कर रहे हैं कि तुम जीवन में क्या करना चाहते हो एवं जो तुम पर अपने आचार-विचार और अपनी जीवन शैली नहीं थोपते

their ways of life or their ways of conduct, that you feel you can grow, that you can live. That is only possible when you are at school with proper environments, with proper teachers.	तभी तुम्हें लगता है कि तुम सच्चे अर्थ में विकसित हो सकते हो और जी सकते हो। एक उचित प्रकार के वातावरण एवं शिक्षकों वाले स्कूल में ही यह बात संभव है।
One of the things that prevents the sense of being secure is comparison. When you are compared with somebody else, in your studies or in your games or in your looks, you have a sense of anxiety, a sense of fear, a sense of uncertainty. So, as we were discussing yesterday with some of the teachers, it is very important to eliminate, in our school here at Rajghat, this sense of comparison, this sense of giving you grades or marks, and ultimately the fear of examination.	ऐसी कई चीजें है जो सुरक्षित अनुभव करने के मार्ग में बाधक हैं और उनमें से एक है तुलना। जब पढ़ाई, खेलकूद या रूपरंग के मामले में तुम्हारी तुलना किसी अन्य विद्यार्थी से की जाती है तो तुम्हें चिंता, भय और अनिश्चितता का बोध होता है। अतः जैसा कि हम कल कुछ शिक्षकों के साथ चर्चा कर रहे थे, यह अत्यंत आवश्यक है कि हमलोग अपने इस राजघाट स्कूल में तुलना के भाव को, विद्यार्थियों की श्रेणी और अंक देने के कार्य को तथा उनके मन से परीक्षा के भय को पूरी तरह समाप्त कर दें।
You are afraid of your examinations, are you not? That means what? There is that threat before you all the time that you might fail, that you are not doing as well as you should, so that during all the years that you live in the school, there is this dark cloud of examinations hanging over you. We were discussing yesterday with some of the teachers whether it is possible not to have examinations at all but to watch over you every day, month after month, to see that you are learning naturally and happily and easily, to find out what you are interested in and to encourage that interest, so that when you leave the school, you go out with a great deal of intelligence, not just merely with the capacity to pass an examination. After all, if you have studied or you have been encouraged to study in your own interest because you like to do it, in which there is no fear - all the time, not just the last two or three months when you have to spurt and read for many hours to pass examinations - if you are watched over all the time and cared for, then when the examination comes, you can easily pass it.	तुम लोग अपनी परीक्षाओं से भयभीत हो। क्या ऐसा नहीं है? इसका क्या अर्थ है? तुम्हारे सामने हर समय यह आशंका बनी रहती है कि मैं परीक्षा में कहीं फेल न हो जाऊँ, कि मैं पढ़ाई में उतना अच्छा नहीं कर पा रहा हूँ जितना कि मुझे करना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप तुम जब तक स्कूल में रहते हो तब तक तुम पर परीक्षाओं के काले बादल मँडराते रहते हैं। कल हमारी बातचीत कुछ शिक्षकों से इस विषय पर हो रही थी कि क्या यह संभव है कि हम अपने स्कूल में परीक्षाएँ न रखें, बल्कि हम प्रत्येक महीने, दिन-प्रति-दिन तुम पर निगरानी रखें तथा यह देखें कि तुम सहज-स्वाभाविक रूप से एवं आनंदपूर्वक सीख रहे हो या नहीं तथा हम यह भी पता लगाएँ कि तुम्हारी अभिरुचि किस क्षेत्र में है और उस अभिरुचि को हम प्रोत्साहन दें, ताकि जब तुम इस स्कूल से निकलकर बाहर जाओ तो तुम्हारे पास प्रचुर प्रज्ञा हो न कि केवल परीक्षा पास करने की योग्यता। आखिर सच्चाई यही है कि यदि तुम्हें अपनी अभिरुचि के अनुसार स्वेच्छापूर्वक अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए और तुम तदनुसार समुचित रूप से अध्ययन करो, क्योंकि ऐसा करना तुम्हें पसंद है न कि तुम किसी भय के कारण ऐसा करते हो और ध्यान रहे कि इस तरह से अध्ययन हर समय चलता रहे न कि जब परीक्षा निकट आए तो तुम अंतिम दो-तीन महीनों में घंटों बैठकर अचानक जोरों से पढ़ाई करने लगो ताकि तुम परीक्षा पास कर जाओ। तो इस प्रकार यदि हर समय तुम्हारी देखभाल की जाए और तुम्हारा ख्याल रखा जाए तब जब परीक्षा आयेगी तो तुम आसानी से उसे पास कर सकते हो।
You study better when there is freedom, when there is happiness, when there is some interest. You all know that when you are playing games, you are doing dramatics, when you are going out for walks, when you are looking at the river, when there is	तुम बेहतर ढंग से तब अध्ययन करते हो जब तुम स्वतंत्र और आनंदित अनुभव करते हो तथा जब अपने अध्ययन के विषयों में तुम्हारी अभिरुचि होती है। तुम सभी ने इसे महसूस किया होगा कि जब तुम खेल रहे होते हो, नाटक में भाग ले रहे होते हो, बाहर टहल रहे होते हो या इस गंगा नदी को देख रहे होते हो

general happiness, good health, then you learn much more easily. But when there is the fear of comparison, of grades, of examinations, you do not study or learn so well; but, unfortunately, most of your teachers indulge in that old-fashioned theory. Given the right atmosphere of enjoyment, of no fear, of not being compelled to do something, so that he is happy or is enjoying life in that state, a student studies much better. But the difficulty is, you see, neither the teachers nor the students think in these terms at all. The teacher is concerned only that you should pass examinations and go to the next class; and your parent wants that you should get a class ahead. Neither of them is interested that you leave the school as an intelligent human being without fear.	अर्थात् जब तुम सामान्यतः प्रफुल्ल और स्वस्थ अनुभव करते हो तब तुम अधिक आसानी से किसी भी चीज को सीख पाते हो, परंतु जब तुम्हारे भीतर तुलना का अथवा परीक्षाओं में अच्छी श्रेणी या अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर पाने का भय रहता है तब तुम उतनी आसानी से अध्ययन और सीखने का कार्य नहीं कर पाते। दुर्भाग्य यह है कि तुम्हारे अधिकांश शिक्षकों को दकियानूसी सिद्धान्तों पर चलने में ही मजा आता है। यदि आनंदपूर्वक जीने का एक समुचित वातावरण प्रस्तुत किया जाय जिसमें कोई भय न हो तथा जिसमें कुछ भी करने के लिए विद्यार्थी को बाध्य न किया जाए, ताकि वह सदा प्रसन्न रहे अर्थात् वह जीने का आनंद ले पाए, तो ऐसी अवस्था में विद्यार्थी बेहतर ढंग से अध्ययन कर पाता है, लेकिन कठिनाई यह है कि इस ढंग से न अध्यापक सोचते हैं और न विद्यार्थी। शिक्षक को केवल इस बात से सरोकार है कि तुम परीक्षा पास करके अगली कक्षा में चले जाओ और तुम्हारे माता-पिता भी केवल यही चाहते हैं कि तुम एक कक्षा से दूसरी कक्षा में बढ़ते रहो। इनमें से कोई भी व्यक्ति इस बात में रुचि नहीं रखता कि तुम एक निर्भय और प्रज्ञावान मानव के रूप में स्कूल से पढ़कर निकलो।
The teachers and the parents are used to the idea of pushing a boy and girl through examinations because they are afraid that if they are not compelled, if they have no competition or no grades, they will not study. To them, it is a comparatively new thing to bring up and educate boys and girls without comparing, without compulsion, without threat, without instilling fear.	अध्यापक और अभिभावक इस प्रकार से सोचने के अभ्यस्त हो चले हैं कि छात्र और छात्रा को किसी न किसी तरह परीक्षा पास करवा दिया जाए, क्योंकि उन्हें इस बात का डर है कि यदि विद्यार्थियों पर दबाव न डाला जाए, यदि उन्हें प्रतिस्पर्धा का सामना न करवाया जाय या अगर उनको श्रेणी और अंक न दिये जाएँ तो वे पढ़ेंगे ही नहीं। उनके लिए यह अपेक्षाकृत एक नयी बात है कि बच्चों का पालन-पोषण या उनकी पढाई बिना किसी तुलना, दबाव, डाँट फटकार और डराने-धमकाने के भी हो सकती है।
What do you, students, really think will happen if you have no examinations, no grades? When you are not being compared with somebody else, what would happen to your studies. Do you think that you will study less?	क्या तुम सोच कर बता सकते हो कि यदि तुम्हें परीक्षाएँ देनी न पड़े और अंक प्राप्त न करने पड़े तो क्या होगा? यदि तुम्हारी तुलना किसी और विद्यार्थी से न की जाए तो तुम्हारी पढ़ाई का क्या हाल होगा? क्या तुम्हें लगता है कि उस स्थिति में तुम कम पढ़ोगे?
A voice: `Of course'. I do not think so. It is surprising that, even though you are young, you have already accepted the old theory! It is a tragedy. Look, you are young and you think compulsion is necessary to make you study. But if you are given the right atmosphere, if you are encouraged and looked after, you will surely study well - it does not matter if you pass examinations or not.	(किसी विद्यार्थी का स्वरः ''अवश्य ही'') परंतु मुझे ऐसा नहीं लगता। यह आश्चर्य की बात है कि यद्यपि तुम युवा हो पर तुमने पहले से ही पुराने सिद्धांत को स्वीकार कर लिया है। यह एक दुःखद स्थिति है। देखो, तुम युवा हो और तुम सोचते हों कि तुम पर दबाव डालना जरूरी है ताकि तुम बाध्य होकर पढ़ो, लेकिन बजाय इसके अगर तुम्हें सही वातावरण दिया जाए, सही प्रोत्साहन दिया जाए और तुम्हारी समुचित देखभाल की जाए तो तुम अवश्य ही अच्छी तरह पढ़ोगे फिर इसका कोई खास महत्त्व नहीं है कि तुम परीक्षाएँ पास करते हो या नहीं।
They have experimented with all this in other countries. Here, we have not thought	बाहर के अन्य देशों में वे इन चीजों के साथ प्रयोग कर चुकें हैं, परंतु यहाँ हमने इन चीजों पर विचार नहीं

about all these things and so you, as a student, say `I must be compelled, compared, forced; otherwise, I won't study.' So, you have already accepted the pattern of the old. You know what the word `pattern' means? It means the idea, the tradition of the older people. You have not thought it out. Look! while you are young, it is the time of revolution, of thinking out all these problems, not just to accept what the old people say. But the old people insist on your following the tradition because they do not want you to be a disturbing factor, and you accept.	किया है, इसलिए एक विद्यार्थी के रूप में तुम कहते हो, ''यह जरूरी है कि मुझे बाध्य किया जाय, मेरी तुलना औरों के साथ की जाए, मुझ पर दबाव डाला जाए अन्यथा मैं नहीं पढ़ूँगा।'' इस प्रकार तुम पहले से ही पुराने ढाँचे को स्वीकार कर चुके हो। क्या तुम जानते हो कि ढाँचा का क्या मतलब है? ढाँचा का मतलब है बड़े-बूढ़े लोगों की विचारधारा और परंपरा। तुमने इन चीजों पर सोच-विचार नहीं किया है। देखो, जब तुम किशोरावस्था में होते हो तो वह क्रांति का समय होता है अर्थात् वही समय है जब तुम्हें इन समस्याओं पर सोच-विचार करना चाहिए, न कि बड़े-बूढ़े जो कहते है उसे आँख मूँदकर स्वीकार कर लेना चाहिए। जो बड़े-बूढे हैं वे इस बात पर जोर देते हैं कि तुम परंपरा का अनुसरण करो क्योंकि वे नहीं चाहते कि तुम पुरानी व्यवस्था में किसी तरह की हलचल मचाओं और तुम उनकी बात मान लेते हो।
So, the difficulty is going to be because the teachers and you are both thinking that compulsion of some kind, appreciation of some kind, coercion, comparison, grades, examinations are necessary. It is going to be very difficult to remove all that and to find ways and means without all that, so that you study naturally, easily and happily. You think it is not possible. But we have never tried it. This way - the way of examinations, appreciation, comparison, compulsion - has not produced any great human beings, creative human beings. The persons produced already have no initiative; they just become automatic clerks, or governors or book-keepers with a very small mind, meagre mind, dull mind. Do you see this? You are not listening to all this because you think this is impossible. But we have got to try it. Otherwise, you will be living in an atmosphere of fear, of threat; and no one can live happily in such an atmosphere. It is going to be very difficult, when one has been used to this way of thinking, living, studying, to completely change, push that aside and find a way to study, to enjoy. That can be done only if we all agree, all the students and all the teachers, that there should be no fear and that it is essential for all of us to feel a sense of emotional, mental, physical security while we are young. Such security is not when there are all these threats. The difficulty is that we are all not concerned with many of the deeper problems of life. The teachers are only concerned to help you to pass examinations, to make you study;	अतः बुनियादी समस्या ज्यों की त्यों बनी रहेगी क्योंकि शिक्षक और तुम यह सोचते हो कि किसी न किसी प्रकार का दबाव, मूल्यांकन, बलप्रयोग, तुलना वर्गीकरण एवं परीक्षाएँ आवश्यक हैं। इस प्रकार हमलोगों के लिए यह एक बहुत मुश्किल काम है कि हम इन चीजों को मिटा दें और इनसे मुक्त ऐसे उपाय और साधन खोजें जिससे तुम सहज-स्वाभाविक ढंग से तथा प्रसन्नतापूर्वक अध्ययन कर पाओ। तुम सोचते हो कि यह संभव नहीं है, लेकिन हमलोगों ने कभी इसका प्रयास भी तो नहीं किया है। परीक्षा मूल्यांकन, तुलना, दबाव इत्यादि पर आधारित शिक्षा का जो मौजूदा स्वरूप है उसने महान् और सृजनात्मक मानवों को नहीं उत्पन्न किया है। ऐसी शिक्षा से अब तक जो लोग निकले हैं उनके पास पहल करने की शक्ति नहीं है। वे दरअसल स्वचालित मनुष्य हैं – भले ही वे एक किरानी और मुनीम हों या एक राज्यपाल – क्योंकि उनके पास एक छोटा, निर्बल और संवेदनशून्य मन है। क्या तुम इस तथ्य को देख रहे हो? मुझे लगता है कि तुम इन बातों को ध्यान से नहीं सुन रहे हो क्योंकि तुम सोचते हो कि यह सब असंभव है। परंतु हमें इसे आजमाना होगा अन्यथा तुम भय और आशंका के वातावरण में ही जीते रहोगे और इस तरह के वातावरण में कोई भी व्यक्ति आनंद से नहीं जी सकता। चूंकि तुम इस ढंग से सोचने, अध्ययन करने और जीने के अभ्यस्त हो गये हो अतः तुम्हारे लिए यह काम बहुत मुश्किल है कि तुम इन सबको परे हटा कर स्वयं को पूर्णतः बदल डालो और आनंदपूर्वक अध्ययन करने और जीने का मार्ग खोजो। ऐसा करना तभी संभव है जब हम सभी शिक्षक और विद्यार्थी इस बात पर सहमत हो जाएँ कि हमारे दैनिक जीवन में किसी भी प्रकार का भय नहीं होना चाहिए और अपने बचपन के दौरान हम सभी लोग शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से सुरक्षित अनुभव करें। इस प्रकार की सुरक्षा तब असंभव हो जाती है जब हमें आशंकाओं में जीना पड़ता है। कठिनाई यह है कि जीवन की जो अनेक गहरी समस्याएँ है उनसे हम कोई सरोकार ही नहीं रखते। शिक्षकों का केवल इस बात से सरोकार है कि वे परीक्षाएँ पास करने में तुम्हारी

but they are not concerned with your whole being. Do you understand what I mean? The way you think, the way your emotions are, the outlook, the traditions, the kind of person you are as a whole - the conscious and the unconscious - all that nobody is concerned with.	सहायता करें तथा तुम्हें पढ़ने के लिए बाध्य करें, लेकिन तुम्हारे संपूर्ण अस्तित्व से उनका सरोकार नहीं है। क्या तुम मेरा मतलब समझ रहे हो? जिस ढंग से तुम सोचते हो, जिस ढंग की तुम्हारी भावनाएँ हैं, तुम्हारा दृष्टिकोण और तुम्हारी परंपराएँ हैं अर्थात् कुल मिलाजुलाकर तुम जिस ढंग के व्यक्ति हो – तुम्हारा चेतन और अचेतन व्यक्तित्व – इस से कोई भी व्यक्ति सरोकार नहीं रखता।
Surely, the function of education is to be concerned with the whole of your being. You are not just a student to be pushed through certain examinations. You have your affections, your fears; just watch your emotions, what you want to do, your sex life. Here, in the school, all that the teachers are concerned with is to make you study even some subject in which you are not greatly interested and to pass through, and they think you have been thereby educated.	निस्संदेह शिक्षा का कार्य है तुम्हारे संपूर्ण अस्तित्व से सरोकार रखना। तुम केवल एक विद्यार्थी नहीं हो जिसे किसी न किसी तरह कुछ परीक्षाएँ पास कारवा देना है। तुम्हारी कुछ अपनी प्रवृत्तियाँ हैं, भय हैं, इसलिए तुम मात्र अवलोकन करो अपने भावों का, जो कुछ तुम करना चाहते हो उसका तथा अपनी कामवासना इत्यादि का। यहाँ स्कूल में शिक्षकों का सरोकार मात्र जिस बात से हैं वह है अध्ययन करने के लिए प्रेरित करना, उन विषयों का अध्ययन भी जिसमें तुम्हें कोई विशेष अभिरुचि नहीं है ताकि तुम उन विषयों में पास हो जाओ और इससे वे सोचते हैं कि तुम शिक्षित हो गये।
To be educated implies, does it not?, to understand the whole, the total process, the total being, of you. To understand that, there must be on your part as well as on the teachers' part, a feeling that you can trust, that there is affection, that there is a sense of security and not fear. Look! this is not something impossible, something utopian, or a mere ideal. It is not. If all of us put our heads together, we can work this out. It must be worked out in the school; if not, the school must be a total failure like every other school. So, you have to understand the problem that one can really study much better, more easily, in an atmosphere in which there is no fear, in which you are not compelled, forced, compared, driven, in which you can study much better than in the old system, in the old ways. But of that, we must be completely sure.	क्या शिक्षित होने का वास्तविक अर्थ यह नहीं है कि तुम अपने संपूर्ण अस्तित्व की संपूर्ण और समग्र प्रक्रिया को समझो? इसको समझने के लिए तुम्हारे और शिक्षकों के बीच यह भाव होना चाहिए कि तुम परस्पर भरोसा कर सकते हो तथा वहाँ स्नेह और सुरक्षा का अनुभव होना चाहिए, भय का अनुभव नहीं होना चाहिए। देखो, यह कोई असंभव चीज नहीं है, कोई यूटोपिया यानी निरा आदर्श मात्र नहीं है। ऐसा सचमुच नहीं है। यदि हम सभी लोग मिलजुलकर इस पर विचार करें तो हम इसे कार्य रूप दे सकते हैं। इसका कार्यान्वयन इस स्कूल में होना ही चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता तो यह स्कूल भी दूसरे हर स्कूल की तरह पूर्णतः असफल माना जाएगा। अतः तुम्हें इस तथ्य को समझना होगा कि कोई भी व्यक्ति अधिक अच्छे ढंग से और आसानी से उसी वातावरण में अध्ययन कर सकता है जिसमें किसी प्रकार का भय नहीं है तथा जिसमें तुम्हें बाध्य नहीं किया जाता, तुम पर दबाव नहीं दिया जाता, तुम्हारी तुलना नहीं की जाती किसी से, तुम्हें किसी विशेश दिशा में ढकेला नहीं जाता। ऐसे वातावरण में तुम शिक्षा की पुरानी पद्धति और शैली की तुलना में कहीं बेहतर ढंग से अध्ययन कर सकते हो। लेकिन इस पर हमें पूरा भरोसा होना चाहिए।
That is what we are doing here in the afternoons with the teachers. We talk over all this problem to see that you go out of this school, not as a machine but as a human being with your whole being active, intelligent, so that you properly face all the difficulties of life but not merely react to them according to some tradition.	अपराह्न के समय इसी विषय पर हम चर्चा करते हैं शिक्षकों के साथ। हमलोग इस सारी समस्या पर चर्चा करते हैं यह पक्का करने के लिए कि तुम जब इस स्कूल से निकलो तो एक यंत्र के रूप में नहीं बल्कि एक ऐसे मानव के रूप में जो अपने पूरे प्राणों से सक्रिय एवं प्रज्ञावान है, ताकि तुम जीवन की सारी कठिनाइयों का सामना समुचित ढंग से करो, न कि उनकी और किसी परंपरा के अनुसार प्रतिक्रिया करो।
	राजघाट फोर्ट, वाराणसी, जनवरी ७, १९५४

	'टॉक्स विद राजघाट स्टूडेंट्स'' से अनूदित
	अनुवाद : हरीश
Stand up against the Society	**समाज के विरुद्ध खड़ा होना**
1st QUESTION: During your first talk here your appeal to stand up against the corrupt and immoral society like a rock protruding from the mid-stream of the river, confuses me deeply. You see, sir, this rock means, to me, to be an outsider. Such an outsider is his own light and does not need to stand up against anything or anybody. Your clarification and answer is very important to me.	प्रश्नकर्ताः पहली वार्ता के दौरान आपने इस भ्रष्ट और अनैतिक समाज के विरुद्ध खड़े होने की बात कही उसी तरह जैसे एक नदी की बीच धारा में कोई चट्टान खड़ी रहती है। मैं इसे स्पष्ट रूप से नहीं समझ पा रहा हूँ क्योंकि चट्टान एक बाहरी सत्ता है और एक बाहरी सत्ता को स्वयं अपने जीवन में किसी वस्तु या व्यक्ति के विरुद्ध खड़े होने की आवश्यकता नहीं है। आपके स्पष्टीकरण और उत्तर मेरे लिए बहुत महत्त्व रखते हैं।
3 First of all, are we clear at what level, at what depth, when we use the word 'corruption' it implies? There is the physical corruption of the pollution of the air, in cities, in manufacturing towns, they are destroying the seas, they are killing nearly fifteen million and more whales, they are killing baby seals and so on and so on. There is the physical pollution in the world. Then there is the overpopulation. Then there is the corruption politically, religiously, and so on. Throughout the world, and more so in certain countries, as you travel around, observe, talk to people and so on, there is corruption everywhere. And more so, unfortunately, in this part of the world - passing money under the table, if you want to buy a ticket you have to bribe, you know all the game that goes on in this country. I am not insulting the country. As somebody said to me the other day that I was insulting the country when I said there were no good cars here, beautiful cars. Is the corruption - the word 'corrupt' means to break up, rompere comes from Latin, French and so on, it means to break up - not only in the country, various parts against the other communities and states and so on, but basically corruption of the brain and the heart. So we must be clear at what level we are talking about this corruption: at the financial level, at the bureaucratic level, political level, or the religious world which is ridden with all kinds of superstition, without any sense at all, just a lot of words that have lost all meaning, both in the Christian world and in the Eastern world - the repetition of rituals,	कृष्णमूर्तिः सबसे पहली बात तो यह है कि क्या यह हमारे लिए स्पष्ट है कि हमलोग किस तल पर या किस गहराई तक भ्रष्ट शब्द का प्रयोग कर रहे हैं? भौतिक तल पर भ्रष्टता है, जैसे शहरों और महानगरों में वायु-प्रदूषण। मनुष्य समुद्रों को नष्ट कर रहा है, उसने पाँच करोड़ से अधिक व्हेल मछलियों को मार डाला है। सील मछली के बच्चों को भी नष्ट किया जा रहा है। इसके बाद राजनीतिक, धार्मिक आदि स्तरों पर भी भ्रष्टता है। यदि आप विश्व का भ्रमण करें, चारों ओर नजर दौड़ाएँ, लोगो से बात करें तो आप पाएंगे कि हर जगह भ्रष्टाचार का बोलबाला है, और दुर्भाग्य से इस देश में तो यह बहुत ही ज्यादा है--टेबिल के नीचे रुपये लिये और दिये जाते हैं। अगर आप टिकट खरीदना चाहते हैं तो आपको रिश्वत देना होगा। अंग्रेजी भाषा में भ्रष्ट (करप्ट) शब्द का मूल अर्थ है भंग हो जाना, खंडित हो जाना। चारों ओर जो भ्रष्टाचार दिखाई देता है वह बुनियादी रूप से मस्तिष्क और हृदय की भ्रष्टता है। अतः हमारे लिए यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि हम जिस भ्रष्टाचार की बात कर रहे हैं वह वित्तीय, प्रशासनिक और राजनीतिक भ्रष्टाचार है अथवा वह भ्रष्टाचार है धार्मिक जगत का जो अनेक प्रकार के अंध विश्वासों से जर्जर है तथा जिसमें ऐसे शब्दों और कर्मकांडों की भरमार है जो अपने सारे अर्थ खो चुके हैं। क्या यह सब भ्रष्टता नहीं है? कोई भी आदर्श क्या भ्रष्टता का ही एक रूप नहीं है? उदाहरणार्थ अहिंसा आपका आदर्श हो सकता है। चूँकि आप हिंसक हैं इसलिए आपने अहिंसा का आदर्श अपना रखा है, लेकिन जब आप आदर्श का अनुसरण कर रहे होते हैं तब भी आप हिंसक बने रहते हैं। अतः क्या यह उस मस्तिष्क की भ्रष्टता नहीं है जो हिंसा का अंत करने के लिए अपेक्षित कर्म की उपेक्षा करता है? और यह जो हमारे भीतर प्रेम नहीं है बल्कि केवल सुख की वासना है, जिसकी परिणति सदा सुख में होती है क्या इसे भ्रष्टता नहीं कहेंगे? संसार भर में यह प्रेम शब्द अत्यधिक बोझिल है और इसका सम्बन्ध हमेशा सुखोपभोग, चिंता, ईर्ष्या और आसक्ति से रहा है; क्या ये भ्रष्टता के रूप नहीं है? क्या आसक्ति स्वयं भ्रष्टता नहीं है? जब कोई आदमी किसी आदर्श या

you know all that goes on. Is that not corruption? Please, sir, let's talk it over. Is it not corruption? Are not ideals a form of corruption? We may have ideals, say for example, non-violence, because one is violent, and when you have ideals of non-violence and you are pursuing the ideals in the meantime you are violent. Right? So is that not corruption of a brain that disregards the action to end violence? Right, that seems all very clear. And is there not corruption when there is no love at all, only pleasure, with its suffering? Perhaps throughout the world this word is heavily loaded, and being associated with sex and when it is associated with pleasure, with anxiety, with jealousy, with attachment, is that not corruption? Is not attachment itself corruption? Please sirs. When one is attached to an ideal, or to a house, or to a person, the consequences are when you are attached to a person jealousy, anxiety, possessiveness, domination. The consequences are obvious when you investigate attachment. And is not attachment then corruption?	अपने घर या किसी व्यक्ति के प्रति आसक्त होता है तो इस आसक्ति के जो स्पष्ट परिणाम होते हैं वे हैं ईर्ष्या, चिंता, स्वामित्व की वृत्ति इत्यादि। जब आप आसक्ति की जाँच-पड़ताल करते हैं तो क्या आपको नहीं लगता कि वह भ्रष्टता है?
And the questioner says, we must stand like a rock in the midst of a stream, that's only a metaphor, don't carry metaphors too far. A simile is merely a description of what is taking place, but if you make the symbol all important then you lose the significance of what is actually going on.	जहाँ तक आपके प्रश्न का संबंध है जिसमें नदी की बीच धारा में चट्टान की तरह खड़े होने की उपमा के बारे में पूछा गया है, मेरा सुझाव है कि इस उपमा को बहुत दूर तक खींचने की जरूरत नहीं है। कोई भी उपमा किसी तथ्य या घटना का सिर्फ वर्णन है परन्तु यदि आप उपमा को ही महत्वपूर्ण मान लेंगे तो जो वस्तुतः घटित हो रहा है उसके महत्त्व को आप चूक जायेंगे।
So the question is basically, a society in which we live is essentially based on relationship with each other, if that relationship is corrupt, in which there is no love, just mutual exploitation, mutual comforting each other sexually and in various other ways, it must inevitably bring about corruption. So what will you do about all this? That's really the question: what will you, as a human being, living in this world, which is a marvellous world, the beauty of the world, the beauty of the earth, the sense of extraordinary quality of a tree, and we are destroying the earth, as we are destroying ourselves. So what will you, as a human being living here, act, do? So will we, each one of us, see that we are not corrupt? We create the thing which we call	जिस समाज में आप जी रहे हैं वह वस्तुतः मनुष्य के परस्पर संबंधों पर आधारित है। यदि इन संबंधों में प्रेम नहीं है केवल परस्पर शोषण है या अनेक ढंग से एक दूसरे का तुष्टीकरण है, तो यह अवश्यंभावी रूप से भ्रष्टता लायेगा। अतः इन सारी चीजों के बारे में आप क्या करेंगे? यह एक अद्‌भुत जगत है - संसार का सौन्दर्य, पृथ्वी का सौन्दर्य, एक वृक्ष की असाधारण गुणवत्ता और इस पृथ्वी को हम उसी तरह नष्ट कर रहे हैं जिस तरह अपने आपको। अतः इस पृथ्वी पर जीने वाले एक मानव के नाते आप इन बातों का सामना कैसे करेंगे? क्या हम लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति इस बात का ध्यान रखेगा कि कम से कम वह स्वयं भ्रष्ट नहीं है? एक दूसरे के साथ जो हमारा संबंध है उसमें यदि विध्वंस, अनवरत युद्ध, संघर्ष, पीड़ा और निराशा है तो हम जो कुछ है वह अवश्यंभावी रूप से प्रतिबिंबित होगा हमारे द्वारा निर्मित वातावरण में। अतः हम में से हर व्यक्ति इस संबंध में क्या करने जा रहा है? यह जो भ्रष्टता है अर्थात् ईमानदारी का अभाव,

- the abstraction which we call society. If our relationship with each other is destructive, constant battle, struggle, pain, despair, then we will inevitably create an environment which will represent what we are. So what are we going to do about it, each one of us? Is this corruption, this sense of lack of integrity, is it an abstraction, is it an idea, or an actuality which we want to change? It's up to you.	क्या यह एक काल्पनिक विचार है अथवा एक ऐसी वास्तविकता जो कि बदली जानी चाहिए? यह आप पर निर्भर है।
QUESTION: Is there really such a thing as transformation? What is it to be transformed?	प्रश्नकर्ताः क्या रूपांतरण जैसी कोई चीज है? यह क्या है जिसे रूपांतरित करना है?
When you are not observing, seeing around oneself, the dirt on the road, your politicians, how they behave, your own attitude towards your wife, your children and so on, transformation is there. You understand? To bring about some kind of order in daily life, that is transformation, not something extraordinary, outside the world. That is, when one is not clearly thinking objectively, sanely, rationally, to be aware of that and change it, break it. That is transformation. If I am jealous, watch it, and not give it time to flower, change it immediately. That is transformation. When you are greedy, violent, ambitious, trying to become some kind of god, or some kind of holy man, or in business, see the whole business of ambition, how it is creating a world of tremendous ruthlessness. I don't know if you are aware of all this. Competition, sir, is destroying the world, becoming more and more competitive, the world is, more and more aggressive, and if you are, change it immediately. That is transformation. And if you go very much deeper into the problem it is clear that thought denies love. Therefore that one has to find out whether there is an end to thought, end to time, not philosphise over it and discuss it, but find out. Truly that is transformation and if you go into it very deeply, transformation means never a thought of becoming, comparing, it is being absolutely nothing.	कृष्णमूर्तिः जब आप किसी चीज का अवलोकन करते हैं, उसे देखते हैं – सड़क पर उड़ती हुई धूल, राजनीतिज्ञों का लोगों के साथ आचार-व्यवहार, अपनी पत्नी और अपने बच्चों के प्रति आपका बर्ताव तो इस अवलोकन से रूपांतरण घटित होता है। क्या आप इसे समझ रहे हैं? अपने दैनिक जीवन में किसी प्रकार की व्यवस्था लाना भी रूपांतरण है क्योंकि रूपांतरण इस दुनिया से बाहर की कोई विलक्षण चीज नहीं है। यदि आपको किसी से ईर्ष्या होती है तो उस ईर्ष्या का अवलोकन कीजिए, उसे फलने-फूलने का मौका नहीं दीजिए, उसे तुरंत बदल डालिए। यही रूपांतरण है। जब आप लोभी, हिंसक और महत्वाकांक्षी होते हैं या जब आप किसी तरह का धार्मिक आदमी बनने की कोशिश करते हैं तो यह देखिए कि आप कैसे एक परम निरर्थक दुनिया का सृजन करते हैं। मुझे मालूम नहीं कि आपको इसका बोध है या नहीं। प्रतिस्पर्धा इस दुनिया को तबाह कर रही है। यह दुनिया ज्यादा से ज्यादा प्रतिस्पर्धात्मक एवं आक्रामक बन रही है और यदि आप इसे तुरंत बदल डालते हैं तो इसी को रूपांतरण कहा जायेगा। यदि आप इन बातों की अत्यंत गहराई में जाकर छानबीन करें तो आप पाएंगे कि विचार ही हमारी समस्याओं की जड़ है, क्योंकि विचार प्रेम को अस्वीकार करता है। अतः आपको यह पता लगाना है कि विचार अर्थात् समय का अंत हो सकता है या नहीं। इस पर कोई दार्शनिक चर्चा नहीं करनी है, बल्कि सिर्फ पता लगाना है। वस्तुतः यही रूपांतरण है और यदि आप इसकी बहुत गहराई में जाएँ तो आप पायेंगे कि रूपांतरण की इस अवस्था में ऐसा कोई विचार नहीं उठता कि मैं कुछ बनूँ या मैं अपनी तुलना किसी और से करूँ। रूपांतरण का अर्थ है सर्वथा कुछ नहीं हो जाना।
	प्रश्नकर्ताः मुझे लगता कि साधु-संतो ने मूर्तियों और कथा-कहानियों की रचना मनुष्य को यह सिखाने के लिए की है कि वे नेक और सही जीवन कैसे जिएँ। आप इसे मूर्खता कैसे कह सकते हैं?

….first of all who is a saint? The man who struggles to become something. Right? The man who gives up the world - really he hasn't given up the world, the world is himself. He may burn inside because he may be sexual, he may be angry, but he is boiling inside. Outwardly he may torture himself, put on strange clothes, slightly neurotic, and soon you will begin to worship him. Out of the window the speaker was watching one day in Benares, a sannyasi in robes came along, sat under a tree with some kind of stick or steel something in his hand and began to shout. Nobody paid any attention to him for the first four, five, six days. The speaker was watching all this from his window at Rajghat. Then an old lady comes along and give him a flower; and a few days later there were about half a dozen people around him, he has a garland. At the end of a fortnight he became a saint. I don't know if you realize in the West a man who is slightly distorted in his brain is sent to a mental hospital, here he becomes a saint. I am not being cynical, I am not being rude, insulting, but this is what is happening. A sannyasi is no longer a sannyasi, he is just following a tradition. And have the saints created the world, brought about through stories, ideals, a good society, a good human being? You are the result of all that. Are we good human beings? Good in the sense, whole, non-fragmented, not broken up; good means also holy, not just good qualities, I don't mean that, good behaviour, being kind, that's only part of it. Being good implies an unbroken, unfragmented, harmonious human being. Are we that, after these thousands of years of saints, and Upanishads, and Gitas and all the rest of that? Or are we just like everybody else? So we are the humanity. To be good is not to follow, to be able to understand the whole movement of life. I must go on.	कृष्णमूर्तिः क्या इस प्रश्न का उत्तर देने की जरूरत है? सबसे पहली बात, साधु या संत कौन है? क्या वह आदमी जो कुछ बनने के लिए संघर्ष कर रहा है? क्या वह आदमी जो संसार छोड़ देता है? वह संसार को नहीं छोड़ रहा है क्योंकि वह खुद संसार है। वह क्रोधी हो सकता है और भले ही वह क्रोध को नियंत्रित करे परंतु अंदर ही अंदर वह उबलता रहता है। वह अपने आपको यंत्रणा दे सकता है, संभव है कि वह थोड़ा विक्षिप्त भी हो, परंतु बहुत जल्दी आप उसकी पूजा करने लगते हैं। एक दिन वाराणसी में मैंने देखा कि एक संन्यासी गेरुआ कपड़े पहने आया; हाथ में छोटा सा दंड लिये हुए वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और जोर-जोर से कुछ बोलने लगा। चार-पाँच दिनों तक तो किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। यह वक्ता राजघाट में अपने कमरे की खिड़की से यह सारा दृश्य देख रहा था। पाँच दिनों बाद एक बूढ़ी औरत आकर उस संन्यासी को कुछ फूल अर्पित कर गयी। उसके कुछ ही दिनों बाद कोई आधा दर्जन लोग उस संन्यासी के आसपास मौजूद थे और उसके गले में फूल की मालायों पड़ी हुई थी। दो सप्ताह में तो वह एक मान्यता प्राप्त संत बन गया था। पता नहीं, आप यह सब समझ रहे हैं या नहीं। पश्चिमी देशों में ऐसा आदमी जो थोड़ी विक्षिप्त है उसे पागलखाने भेज दिया जाता है। यहाँ उस तरह का आदमी साधु-संत कहलाता है। मैं कोई छिद्रान्वेषण नहीं कर रहा हूँ। कृपया आप इसे मेरी धृष्टता या अशिष्टता न समझें, बल्कि यही चारों ओर हो रहा है। एक संन्यासी अब संन्यासी नहीं रह गया है, वह सिर्फ एक परंपरा का अनुगामी है। जरा यह तो बताइए कि क्या साधु-संतों ने अपने कथाओं, मूर्तियों और आदर्शो के द्वारा एक भिन्न संसार का, एक अच्छे समाज का या एक अच्छे मानव का निर्माण किया है? इन्हीं अनर्गल बातों के परिणाम तो आप हैं। क्या हम अच्छे मानव हैं - इस अर्थ में अच्छे कि क्या हम संपूर्ण, अखंडित और अविभाजित हैं? अच्छा का अर्थ पवित्र और धार्मिक भी होता है। मेरा अभिप्राय यहाँ अच्छा आचरण करना या दयालु होना नहीं है, वह तो अच्छाई का केवल एक अंग है। एक अच्छे मानव का निहितार्थ है एक अविभाजित अखंडित और सुव्यवस्थित मानव। क्या हम ऐसे मानव हैं, हजारों वर्षो से मौजूद इन साधु-संतों, उपनिषदों और गीता के बावजूद? अथवा हम और लोगों की तरह ही हैं? हम ही तो मानवता हैं। अच्छा होने का अर्थ है अनुसरण नहीं करना। अच्छा होने का अर्थ है जीवन की समस्त गति को समझने की सामर्थ्य रखना।
24 5th QUESTION: You say that if one individual changes he can transform the world. May I submit that in spite of your sincerity, love and truthful statement, and that power which cannot be described, the	प्रश्नकर्ताः आप कहते हैं कि अगर एक व्यक्ति रूपांतरित होता है तो वह संसार का रूपांतरण कर सकता है। मैं विनम्रतापूर्वक यह कहना चाहूँगा कि आप में जो सच्चाई, प्रेम और सत्यवादिता है तथा एक ऐसी शक्ति जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता बावजूद

world has gone from bad to worse. Is there such a thing as destiny?	इनके यह संसार बद से बदतर होता चला गया है। क्या नियति जैसी कोई चीज भी होती है?
What is the world? What is the individual? What has one individual done individually, as we understand it generally describing an individual, what have individuals done in the world which has influenced the world? Hitler has influenced the world. Right? Mao Zedong has influenced the world; Stalin has influenced the world, Lenin, Lincoln, and also totally different, the Buddha has influenced the world. One person. One person killed millions and millions of people, Mao Zedong, Stalin, Lenin, Hitler and all the warmongers, the Generals, they have all killed, killed, killed. That has affected the world. Right? That is obvious. History is filled with wars. Within the last historical five thousand years where history has been kept, there has been a war every year, practically, right throughout the world, that has affected millions of people. And you have the Buddha on one side, he has also affected the human mind, the human brain throughout the East. And there have been others who have distorted. So when we talk about individual change, and will that individual change bring about any transformation in society, I think that is a wrong question to put	कृष्णमूर्ति संसार क्या है? व्यक्ति क्या है? इस संसार में व्यक्तियों ने ऐसा कौन सा काम किया है जिसने संसार को प्रभावित किया है? हिटलर ने संसार को प्रभावित किया है और उसी तरह माओत्से जुंग, स्टालिन, लेनिन एवं सभी युद्धप्रिय व्यक्तियों ने संसार को प्रभावित किया है।यह बात बिलकुल स्पष्ट है। इतिहास युद्धों से भरा है। यदि आप पाँच हजार वर्षो का इतिहास उलटकर देखें तो पाएंगे कि संसार के किसी न किसी कोने में हर वर्ष युद्ध होता रहा है। उसने करोड़ों लोगों को बुरी तरह प्रभावित किया है। अच्छे लेागों ने भी संसार को प्रभावित किया है। एक ओर यदि बुरे व्यक्ति हैं तो दूसरी ओर बुद्ध हैं जिन्होंने सारे पूर्वी जगत में मानव मन एवं मानव मस्तिष्क को अपने ढंग से प्रभावित किया है। तो जब हम वैयक्तिक परिवर्तन की बात करते हैं और पूछते हैं कि यह वैयक्तिक परिवर्तन समाज में कोई रूपांतरण लाएगा या नहीं, तो मेरे विचार से हम एक गलत सवाल पूछ रहे हैं।क्या सचमुच हमारा सरोकार समाज के रूपांतरण से है वह समाज जो भ्रष्ट और अनैतिक है तथा जो प्रतिस्पर्धा एवं निष्ठुरता पर आधारित है? उसी समाज में तो हम लोग जी रहे हैं। यदि आपको अकेले ही इस समाज को बदलना पड़े तब भी क्या इस कार्य में आपकी सचमुच दिलचस्पी होगी? यदि आपकी दिलचस्पी होगी तो सबसे पहले आपको यह छानबीन करनी चाहिए कि समाज क्या है। क्या समाज एक शब्द है एक काल्पनिक चीज है या वह एक वास्तविकता है? क्या वह एक वास्तविकता है या मानव संबंधों का एक कल्पना–जाल है? वस्तुतः मानव संबंध ही समाज है। तो यह मानव संबंध जो विभिन्न जटिलताओं, मनोदशाओं एवं घृणा से जुड़ा है क्या इस मानव संबंध के संपूर्ण ढाँचे में आप परिवर्तन ला सकते हैं? आप ला सकते हैं। आप स्वयं अपनी निष्ठुरता और इससे जुड़ी चीजों का अंत कर सकते हैं। दूसरों के साथ आपका जैसा संबंध होता है वैसा ही वातावरण आप अपने आसपास निर्मित कर लेते हैं। यदि आपका यह संबंध दूसरों पर अधिकार जताने वाला तथा स्वकेन्द्रित है तो आप अपने आसपास एक ऐसी चीज निर्मित कर रहे हैं जो उतनी ही विनाशकारी होगी। अतः व्यकित आप है और आप ही शेष मानव जाति है। पता नहीं इसे आप अनुभव कर रहे हैं या नहीं।
2nd QUESTION: You often switch over from mind to brain. Is there any difference between them? If so, what is the mind?	प्रश्नकर्ताः आप प्रायः मन पर चर्चा करते करते मस्तिष्क पर आ जाते हैं। क्या मस्तिष्क और मन के बीच कोई अंतर है? यदि है, तो मन क्या है?
K: I am afraid it is a slip of the tongue. I am only talking about the brain. The questioner wants to know what is the mind. Is the mind different from the brain? Is the mind something untouched by the brain, is the mind not the result of time? First of all	कृष्णमूर्तिः शायद ऐसा भूल से होता होगा। मैं मस्तिष्क की बात कर रहा हूँ। प्रश्नकर्ता यह जानना चाहते हैं कि मन क्या है। क्या मन वस्तुतः मस्तिष्क से भिन्न है? क्या मन कोई ऐसी चीज है जो मस्तिष्क से अछूती है? क्या मन समय का परिणाम नहीं है? यह समझने के लिए कि मन क्या है सर्वप्रथम हमें इस बात

to understand what the mind is, we must be very clear how our brain operates, as much as possible. Not according to the brain specialists, not according to the neurologists, according to those who have studied a great deal about the brain's of rats and pigeons and all that, but we are studying, each one of us if we are willing, the nature of our own brain: how we think, what we think, how we act, what's our behaviour, what are the immediate, spontaneous, instant responses, are we aware of that. Are we aware that our thinking is extraordinarily along a narrow groove? Are we aware that our thinking is mechanical, along a certain particular trained activity, how our education has conditioned our thinking, how our careers, whether it is bureaucratic, engineering, or surgical and so on and so on, are they not all of them a directional, conditioned knowledge. Are we aware of all this? How the brain, with its thought - and the scientists now are saying thought is the expression of memory, of the mind, of the brain, which is experience, knowledge, memory, thought, action - they are gradually coming to that, about which we have been talking endlessly, from the beginning, that thought is a material process, there is nothing sacred about thought, and whatever thought creates whether mechanically or idealistically or projecting a future in the hope of reaching some kind of happiness, peace, are all the movement of thought. Are we aware of all this? That when you go to a temple it is nothing but a material process. You mightn't like to hear that, but that is the fact: thought has created the architecture and the thing that is put inside the building, the temple, the mosque, the church, they are all the result of thought. Are we really aware of it, and therefore move totally in a different direction?	का स्पष्ट बोध होना चाहिए कि हमारा मस्तिष्क कैसे कार्य करता है। यह बात हमें किसी मस्तिष्क विशेषज्ञ से नहीं समझनी है, अर्थात ऐसे लोगों से नहीं जो स्नायु विज्ञानी (न्यूरांलजिस्ट) हैं या जिन्होंने चूहों, कबूतरों अथवा अन्य जानवरों के मस्तिष्क का काफी अध्ययन किया है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं अपने ही मस्तिष्क के स्वरूप को समझना होगाः हम कैसे सोचते हैं, हम क्या सोचते हैं, हम कैसे व्यवहार करते हैं, हमार आचरण क्या है, हमारी सहज तात्कालिक प्रतिक्रियाएँ क्या हैं। क्या हमें इनका बोध है? क्या हमें इस बात का बोध है कि हमारी संपूर्ण विचार-प्रक्रिया असाधारण रूप से एक संकुचित खाँचे में ही सीमित है, कि हमारा सोचना-विचारना किन्हीं विशेष गतिविधियों की ओर उन्मुख मार्गो पर ही यंत्रवत चलता रहता है तथा इस बात का भी बोध कि हमारी शिक्षा का स्वरूप निर्धारित होता है किसी विशेष नौकरी या पेशे की ओर उन्मुख अध्ययन द्वारा? वैज्ञानिक अब कहने लगे हैं कि विचार ही मस्तिष्क का सार है, जो हमारा समस्त अनुभव ज्ञान, स्मृति और कर्म है। दरअसल वे इसके अब काफी निकट है। हम तो निरंतर यह कहते रहे हैं कि विचार एक भौतिक प्रक्रिया है। विचार में ऐसा कुछ नहीं है जिसे पवित्र कहा जा सके। और यदि विचार आदर्शवादी ढंग से कुछ निर्मित करता है तो भी वह यांत्रिक ही होता है। सुख और शांति को प्राप्त करने की आशा में हम जिस सुनहरे भविष्य का स्वप्न देखते हैं वह विचार की गति के अतिरिक्त कुछ नहीं है। क्या आपको इसका बोध है कि जब आप मंदिर जाते हैं तो वह और कुछ नहीं बल्कि एक भौतिक प्रक्रिया है? आपको शायद यह सुनना अच्छा नहीं लगा हो लेकिन यह एक तथ्य है। मंदिर, मसजिद और गिरजाघर की जो बाहरी बनावट यानी वास्तुकला है तथा उनके भीतर जो कुछ रखे गये हैं वे सब विचार के ही परिणाम हैं। क्या हमें इन सबका सचमुच बोध है? और इसलिए क्या हम लोग एक बिल्कुल ही भिन्न दिशा की ओर बढ़ रहे हैं?
That tradition, when we accept tradition it makes the mind extraordinarily dull, you just repeat, it is very convenient, so gradually the brain becomes dull, stupid, routine, you can read endlessly the Gita, talk about the book. This is what is happening when in the world there is so much uncertainty, so much pain, so much disorder, chaos, you turn to tradition.	जब आप किसी परंपरा को स्वीकार कर लेते हैं तो ऐसा करना आपके मन को अत्यधिक संवेदनशून्य और मंद बना देता है, भले ही आप अनवरत रूप से गीता पढ़ते रहें। आप परंपरा से बँध जाते हैं। पश्चिम और पूर्व दोनों में यही हो रहा है। क्या आप स्वयं अपने भीतर इस सबको समाप्त कर सकते हैं अथवा आप इतने संवेदनशून्य तथा इस भ्रांति और दुःख के इतने अभ्यास्त हो गये हैं कि आप ऐसा नहीं कर सकते?

That's what is happening both in the West and in the East. They are becoming more and more fanatical, worshipping local deities and so on. Are we aware of this? And can we stop all that, in yourself? Or you are so dull, so used to this confusion, misery, we put up with it? So we have to understand very clearly what the activity of the brain is, which is the activity of our consciousness, which is the activity of our psychology, the psychological world in which we live. The whole of that, the brain, consciousness, psychological world, all that is one. Right? Would you question that? Probably you haven't thought even about all this. You see one reads a great deal about all these matters; if you are a psychologist, if you are a psychoanalyst, if you are therapeutically inclined and so on, you read a lot, but you never look at yourself, never observe your own actions, your own behaviour. So that's why it is very important if you would understand what the mind is, to understand what the activities of thoughts are, which has created the content of our consciousness and the psychological world in which we live, which is part of thought, the structure which thought has built in man, the 'me' and the 'not me', the 'we' and 'they', the quarrels, the battles between ourselves, between each human being. And the brain has evolved through time. That's obvious. Evolved through millennia, millions of years, accumulating knowledge, experience, memory, danger and so on. It is the result of time. Right? There is no question of argument about it. And is love, compassion, with its intelligence, is that the product of thought? You understand this? Is compassion, is love, the product, the result, the movement of thought? You understand my question? Can you cultivate love?	अतः मस्तिष्क की गतिविधि को अत्यंत स्पष्ट रूप से समझना होगा, जो हमारी चेतना की क्रिया है तथा जो हमारे उस मनोवैज्ञानिक जगत की गतिविधि है जिसमें हम जीते हैं। यह सारा का सारा अर्थात् मस्तिष्क, चेतना, मनोवैज्ञानिक जगत यह सभी एक है। क्या आप इस पर शंका करेंगे? संभवतः आप लोगों ने इस पर कभी सोचा भी न हो। मन क्या है यह समझना अत्यंत आवश्यक है ताकि हम यह भी समझ सकें कि विचार की वे कौन सी गतिविधियाँ हैं जिन्होंने हमारी चेतना की उन अंतर्वस्तुओं की तथा उस मनोवैाानिक जगत की रचना की है जिसमें हम जीते हैं। विचार ने मनुष्य के भीतर जिस ढाँचे का निर्माण किया है ''मैं'', और ''मैं नहीं'' ''हम'' और ''वे'', लड़ाई-झगड़े, हर मनुष्य का किसी न किसी से युद्ध वह विचार का ही हिस्सा है। मानव मस्तिष्क का विकाश कालक्रम में, लाखों वर्षो में हुआ है और इस दौरान वह ज्ञान, अनुभव, स्मृति इत्यादि का संग्रह करता रहा है। अतः मस्तिष्क समय का परिणाम है। इस पर कोई तर्क-वितर्क की गुंजाइश नहीं है। अब प्रश्न यह है क्या प्रेम, करुणा और इससे जुड़ी प्रज्ञा विचार के ही परिणाम हैं अर्थात् विचार की ही गति है? सर, क्या आप मेरे प्रश्न को समझ रहे हैं? क्या आप प्रेम को विकसित कर सकते हैं?
3rd QUESTION: I am a student of chartered accountancy. Even though I could understand each and every word of JK, the message remains vague. What should I do to understand his message fully?	प्रश्नकर्ताः मैं 'चार्टर्ड अकाउंटेन्सी' का छात्र हूँ। हालाँकि मैं जे. कृष्णमूर्ति के एक-एक शब्द को समझता हूँ फिर भी उनका जो संदेश है वह मेरे लिए अभी तक अस्पष्ट है। उनके संदेश को पूरी तरह समझने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?
Don't understand his message! He is not bringing a message. He is pointing out your life, not his life, or his message, he is	कृष्णमूर्तिः उसके संदेश को मत समझिए! वह कोई संदेश या उपदेश नहीं दे रहा है। वह आपके जीवन के बारे में बता रहा है न कि अपने जीवन और

pointing out how you live, what's your daily life. And we are unwilling to face that. We are unwilling to go into our sorrow, our tortures of anxiety, loneliness, the depressions we go through, the desire to fulfil, to become something. You are unwilling to face all that, and wanting to be lead by somebody, wanting to understand the message of the Gita, or some other nonsensical book, including the speaker. The speaker says over and over again, he acts as a mirror into which you can look, the activity of your own self. And to look very carefully you have to pay attention, you have to listen - if you are interested - listen and find out the art of listening, the art of seeing, the art of learning. It's all there as a book, which is yourself. The book of mankind is you. Please sir, see all the truth of all this. And we are unwilling to read that book. We want somebody to tell us about the book, or help us to analyze the book, to understand the book. So we invent the priest, the swami, the yogi, the sannyasi, who will tell you all about it. And so we escape from ourselves. So can we read the book, which is so ancient, which contains all the history of mankind, which is you. Can we read that book carefully, word by word, not distorting it, not choosing one chapter and neglecting the other chapter, taking one sentence and meditating about it, but the whole book. Either you read the whole book chapter by chapter, page after page, which may take a long time, if you read page by page it will take all your life; or is there a way of reading it completely with one glance? You understand my question? How can one read this book, which is the 'me', which is the 'you', which is the mankind - all the experiences of miseries, suffering, confusion, lack of integrity, all that is in there - how can you read it at one glance? You understand? Not take month after month, that's impossible. When you do that, taking time over the book, time is going to destroy the book. The book is you, and if you take time to investigate, read the book, that very time is going to destroy because our brain functions in time. You understand all this? So one must have the capacity to listen to what the book, the entire book says. To see clearly, which means that the brain is so alert, so

अपने किसी संदेश के बारे में। वह बता रहा है कि आप कैसे जीते हैं, आपका दैनिक जीवन क्या है, और आप इन बातों का सामना करने से घबरा रहे हैं। हमारे दुःख, यंत्रणा, चिंता, अकेलापन, उदासी का अनुभव तथा कुछ पाने और बनने की लालसा इन चीजों की जाँच पड़ताल करने के लिए हम इच्छुक नहीं है। आप इन सबका सामना करना नहीं चाहते। आप केवल यह चाहते हैं कि कोई और व्यक्ति या स्वयं यह वक्ता आपको मार्ग दर्शन देता रहे। हम गीता या किसी और निरर्थक पुस्तक के संदेश को समझना चाहते हैं। वक्ता बार-बार यह बात कहता है कि यह एक ऐसे आईने की तरह कार्य कर रहा है जिसमें आप अपने स्व की गतिविधि को देख सकते हैं। अत्यंत सावधानीपूर्वक देखने के लिए आपको उस ओर ध्यान देना होगा। यदि आप इसमें दिलचस्पी रखते हैं तो आपको सुनना होगा। अतः सुनिए और पता लगाइए कि सुनने, देखने और सीखने की कला क्या है। यह सब एक किताब की तरह मौजूद है और यह किताब आप स्वयं हैं। मनुष्य जाति की किताब आप ही हैं। सर, कृपया इस बात की सचाई को देखिए। आप उस किताब को पढ़ने की इच्छा नहीं रखते। आप चाहते हैं कि कोई और व्यक्ति आपको उस किताब के बारे में बताए, उस किताब का विश्लेषण करने और उसे समझने में आपकी सहायता करे। अतः आप पुरोहित, गुरु, योगी एंव संन्यासी को ढूँढ लेते हैं, जो आपको इसके बारे में सब कुछ बताए ताकि आप स्वयं से पलायन कर सकें। तो क्या आप इस किताब को पढ़ना चाहेंगे जो अत्यंत प्राचीन है, जिसमें मनुष्य जाति का सारा इतिहास है, जो आप स्वयं है? क्या आप इस किताब को पढ़ सकते हैं - सावधानीपूर्वक, एक-एक शब्द को बिना उसे विकृत करते हुए, इस तरह नहीं कि एक अध्याय को ध्यान से पढ़ते हुए और दूसरे अध्यायों की अनदेखी करते हुए अथवा किसी एक वाक्य को लेकर सिर्फ उसी पर चिन्तन-मनन करते हुए, बल्कि पूरी किताब को ध्यान से पढ़ते हुए? आप इस किताब के एक-एक अध्याय को तथा एक-एक पृष्ठ को अलग-अलग पढ़ सकते हैं परंतु उसमें बहुत अधिक समय लग जाएगा, संभव है कि आपका पूरा जीवन लग जाए। इससे भिन्न, पढ़ने का क्या कोई ऐसा ढंग है कि आप पूरी किताब को एक ही झलक में पढ जाएँ? क्या आप मेरे प्रश्न को समझ रहे हैं? इस किताब को आप कैसे पढ़ेंगे - यह किताब जो आपके और मेरे रूप में मौजूद है तथा जो मानव जाति का समस्त अनुभव है एवं उसका दुःख, पीड़ा भ्रांति ईमानदारी का प्रभाव इत्यादि है? आप इसको महीनों में नहीं बल्कि एक झलक में कैसे पढ़ेगे? किताब आप स्वयं हैं और इस किताब पर यदि आप ज्यादा समय लगाते हैं तो समय इस किताब को नष्ट कर देगा। समय ही नष्ट कर देगा क्योंकि हमारा मस्तिष्क समय के अन्तर्गत ही कार्य करता है। इस पूरी किताब में जो कुछ है उसे स्पष्ट रूप से देखने-सुनने की क्षमता हमारे पास होनी चाहिए अर्थात् मस्तिष्क इतना प्रचंड ढंग से सतर्क और सक्रिय हो जाए कि यह देखना-सुनना उसकी समग्र क्रियाशीलता बन जाए। क्या आप स्वयं को इस किताब

tremendously active, not active as a bureaucrat, or as an engineer, or a businessman, or as a desperate crook, but the total activity of the brain. Can you observe yourself in the mirror of that book, which is yourself completely, instantly, because the book is nothing. I wonder if you understand this. You may read the book from the first page to the last page and you will find there is nothing in it. You understand what I am saying? That means, can you be nothing. Don't become something. You understand? The book is the becoming, the history of becoming. Do you understand all this? Sir, when you have examined yourself, if you examine yourself, if you look into yourself, what are you? A physical appearance, short, tall, beard or no beard, man, woman, name, form, and all the educated capacity, the travail, the pursuit - it's all a movement in becoming something, isn't it? Becoming what? A business manager, achieving, getting more money, becoming a saint? When a man tries to become a saint, he is no longer a saint, just caught in the trap of tradition. So you can glance at the book and see it is absolutely nothing. And to live in this world with nothing. You understand, sirs? No, you don't. So sirs, and ladies, you hear all this, perhaps if you are going, following, travelling with the speaker you hear this at every talk, put in different words, different context, different sentences, but to bring about a complete understanding in oneself that's far more important than anything else in life because we are destroying the world, ourselves, we have no love, no care - you follow, all that. So the speaker has no message. The message is you. The speaker - this is not a matter of cleverness - he is just pointing out this.	के आईने में तत्क्षण समग्रता से देख सकते हैं किताब जो आप स्वयं है? तब आप यह भी देख पायेंगे कि यह किताब कुछ नहीं है। पता नहीं यह बात आपकी समझ में आ रही है या नहीं। आप इस किताब को पहले पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक पढ़ सकते हैं और फिर भी संभवतः आप यही पाएँ कि इस किताब में कुछ नहीं है। क्या आप समझ रहें है जो मैं कह रहा हूँ? इसका अर्थ है कि आप कुछ नहीं हो जाएँ, कुछ भी मत बनें ! इस किताब का अर्थ है होने की प्रक्रिया, होने का इतिहास। अतः क्या आप अपनी छानबीन और अपनी जाँच-पड़ताल करके बता सकते हैं कि आप क्या हैं? एक शारीरिक आकृति, नाटा, लंबा, दाढ़ी नहीं, पुरुष या स्त्री, अपनी शैक्षणिक योग्यता, अपनी छोटी-बड़ी महत्वाकांक्षाएँ क्या यही सब कुछ है आप? क्या यह कुछ बनने की दिशा में ही एक गति नहीं है? क्या बनना है एक ऊँची तनखाह वाला बिजनेस मैनेजर, एक साधु-संत? जब कोई व्यक्ति एक संत बनने का प्रयास करता है तो वह संत नहीं होता, वह परंपरा की लीक में ही उलझ जाता है। अतः आप इस किताब की एक झलक लेकर देख सकते हैं कि यह बिल्कुल ही कुछ नहीं है और तब आप कुछ नहीं होकर इस संसार में जा सकते हैं। सर, क्या आप इसे समझ रहे हैं? नहीं, आप इसे नहीं समझ पा रहे हैं। आप महानुभाव यह वार्ता सुन रहे हैं और आपमें से जो लोग वक्ता के साथ यात्रा करके अन्य जगहों पर जाएंगे वे वहाँ की वार्ताओ में इन्हीं सब बातों को भिन्न शब्दों, भिन्न संदर्भो और भिन्न वाक्यों में सुनेंगे, परंतु जीवन में किसी और चीज से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है स्वयं अपने भीतर एक समग्र समझ उत्पन्न करना, क्योंकि इसके अभाव में हम इस संसार का सर्वनाश कर रहे हैं तथा हममें प्रेम नहीं है, दूसरों का कोई ख्याल नहीं है। अतः इस वक्ता का कोई संदेश नहीं हे, संदेश आप स्वयं है। वक्ता तो सिर्फ संकेत कर रहा है।
	मद्रास, १९८१
	के.एफ.टी. इंगलैंड बुलेटिन, ४२, १९८२
	अनुवाद हरीश